मेरे वतन की ख़ुशबू

अज़रा नक़वी

अनुवादकः मज़हरुद्दीन ख़ान

प्रकाशक

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन

डी-319, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

©

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन

नाम किताब : **मेरे वतन की ख़ुश्बू**

संकलन : अज़रा नक़वी

अनुवादक : मज़हरुद्दीन .ख़ान

पृष्ठ : 116

प्रकाशन : 2023

मूल्य : 150 रूपये

प्रिंटर : अल्फ़ा ऑफ़सेट प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

प्रकाशक **ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन**
डी-319, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली-110024

Merey Watan Ki Khushbu
by : **Azra Naqvi**
Translated by : **Mazharuddin Khan**

मिलने का पता

FBD
باہتمام: ناصر خان

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT(Pvt.)Ltd.
Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, N. Delhi-2
Ph : 011-23289786, 011-23289159, 011-23278954, 011-23279998
NASIR KHAN : +91-9250963868 Mob : +919560870828
E-mail : faridbookcorner@gmail.com Whatsapp : +91-9717968328

बेगम हज़रत महल

रानी लक्ष्मीबाई

और

मिसेज़ सरोजिनी नायडू

के नाम समर्पित

विषय-क्रम

क्र. सं.	नज़्म	शायर	पृष्ठ नंबर
1	आमुख	प्रो. अख़्तरुल वासे	6
2	प्रस्तावना	अज़रा नक़वी	9
3	होली	लुत्फ़ुन्निसा इम्तियाज़	14
4	तराना-ए-इत्तिहाद	ज़े. ख़े. शेरवानिया	15
5	आह गोखले	ज़े. ख़े. शेरवानिया	18
6	तारों से गुफ़्तगू	सआदत बानो किचलू	20
7	गाँधी जी	सआदत बानो किचलू	21
8	रुबाई	सआदत बानो किचलू	22
9	नज़्म का अंश (नज़्म से इक़्तिबास)	ख़दीजा बेगम	23
10	बिरादराने वतन से	शहज़ादी कुलसुम	25
11	बच्चों का पैग़ाम वतन के नाम	ज़ेब उस्मानिया	27
12	आज़ादी के बाद	अज़मत अब्दुल क़य्यूम ख़ान	28
13	हम लोग	अज़मत अब्दुल क़य्यूम ख़ान	31
14	हैंडलूम	बानो ताहिरा सईद	33
15	सामराज की शिकस्त	बानो ताहिरा सईद	35
16	सिपाही की शरीक-ए-ज़िंदगी	बानो ताहिरा सईद	37
17	ज़ंजीर-ए-ग़ुलामी	ज़ाहिदा ख़लीक़ुज़्ज़माँ ज़ाहिदा	40
18	सीता	शफ़ीक़ फ़ातिमा शेरी	41
19	वह राधा-रानी अमर	शफ़ीक़ फ़ातिमा शेरी	44
20	मेरा वतन यही है	साजिदा ज़ैदी	45
21	नज़्रे-इंदिरा	राबिआ बरनी	49
22	क़ौमी यकजहती	सैयदा फ़रहत	53
23	बच्चों की मुस्कान	सैयदा फ़रहत	56
24	मैं हूँ तेरी रुकमणी	रफ़िया शबनम आबिदी	58
25	गणेश जी के नाम	रफ़िया शबनम आबिदी	60
26	गोमती	शमा ज़फ़र मेहदी	64

27	अभिशाप	कहकशाँ तबस्सुम	67
28	ये नफ़रतें क्यूँ?	मलका नसीम	69
29	हम हैं हिंद के शैदाई	मसऊदा हयात	71
30	राखी	मसऊदा हयात	72
31	रंग-बिरंगे मौसम यादों के	अज़रा नक़वी	73
32	मेरे ख़्वाब मुझे लौटा दो	अज़रा नक़वी	75
33	ख़ुशबू-ए-वतन	नुसरत मेहदी	77
34	ग़ज़ल	नुसरत मेहदी	78
35	गुल्हाए अक़ीदत	सैयदा शान मेराज	79
36	सुब्ह शब-ए-इंतिज़ार	सैयदा शान मेराज	81
37	हुस्न का पैकर ताजमहल	सीमा फ़रीदी	83
38	क़ितआ	सीमा फ़रीदी	85
39	गंगो-जमन की ख़ुशबू	तबस्सुम आज़मी	86
40	बरसात	तबस्सुम आज़मी	88
41	नज़्रे-जयपुर	नईमा जाफ़री पाशा	90
42	मारहरा	असना बद्र	92
43	ऐसा हिंदुस्तान	क़मर सुरूर	95
44	नग़मा-ए-इत्तिहाद	शबाना नज़ीर	97
45	वादी-ए-गुल	शबाना नज़ीर	99
46	गीत	फ़ौज़िया रुबाब	101
47	क़ितआत	मीनू बख़्शी	103
48	कारगिल के शहीदों के नाम	परवीन कैफ़	105
49	वो सितारे	शाइस्ता यूसुफ़	107
50	माहिये	उल्फ़त शाकिर	109
51	**ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन: एक नई पहल**		110

आमुख

देशभक्ति एक स्वाभाविक भावना है, जो आस्था का एक अंग भी है। जिसकी अभिव्यक्ति व्यवहारिक रूप से और काव्य एवं साहित्य में भिन्न-भिन्न रूपों में होती है। यह किताब **'मेरे वतन की ख़ुशबू'** उर्दू शायरात (कवयित्रियों) की अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति है। लेकिन यहां यह सवाल पूछा जा सकता है कि देश प्रेम में लैंगिक भेदभाव क्यूँ? और निश्चित रूप से यह विचार करने योग्य है। इसका तात्कालिक उत्तर तो यही हो सकता है कि हमारे समाज में अक्सर महिलाओं को हाशिए पर रखा जाता है। हालांकि उर्दू शायरी और साहित्य के हवाले से हम अल्लामा इक़बाल के ये अशआर (कविताएँ) महिलाओं के हवाले से लिखने और बोलने में बड़े गर्व से बार-बार दोहराते रहते हैं किः

वजूद-ए-ज़न[1] से है तस्वीर-ए-काएनात[2] में रंग
इसी के साज़ से है ज़िंदगी का सोज़-ए-दरूँ[3]
मुकालमात-ए-फ़लातूँ[4] न लिख सकी लेकिन
उसी के शोले से टूटा शरार-ए-अफ़लातूँ[5]

शायर ने इस शेर में एक हक़ीक़त बयान की है कि दुनिया की तस्वीर अगर ख़ूबसूरत है तो सिर्फ़ औरत की वजह से है। औरत की वजह से ही इंसान में कुछ करने का जज़्बा पैदा होता है। अगर दुनिया में सिर्फ़ मर्द ही होते तो यह दुनिया बेरंग हो जाती।

---

[1] महिलाओं के अस्तित्व
[2] ब्रह्मांड की छवि
[3] आंतरिक वेदना
[4] dialogues of Plato book (प्लेटो के संवाद नामक किताब)
[5] अफ़लातून=प्लेटो

औरत अगर बहैसियत माँ प्लेटो की सही परवरिश (प्रशिक्षण) न करती तो वह मुकालमात जैसी किताब लिखने के क़ाबिल न हो सकता। यह सच है कि वह ख़ुद तो ऐसी किताब नहीं लिख सकी लेकिन ऐसी किताब लिखने वाले को उसने जन्म दिया और परवरिश करके ऐसी किताब लिखने के क़ाबिल भी बनाया।

इन अशआर की अर्थपूर्णता और आकर्षण अपनी जगह लेकिन आज का सच यह है कि अब महिलाओं ने आत्मचर्चा के साथ-साथ समाज से भी अपना संवाद स्थापित कर लिया है।

उर्दू में देशभक्ति से ओत-प्रोत शायरी में किसी शायरा (कवयित्री) का नाम कभी-कभी आता है। इसके कारण और व्याख्या जिस तरह बयान किए जाते हैं वह एक अलग विषय है। अज़रा नक़वी द्वारा संकलित यह किताब **'मेरे वतन की ख़ुशबू'** महिलाओं के संदर्भ में एक बड़ी उपलब्धि है और मुझे ख़ुशी है कि ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन ने इस कमी को पूरा करने में एक पहल की है। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की स्थापना का उद्देश्य समाज में विभिन्न धार्मिक संप्रदायों और सामाजिक वर्गों के बीच की दूरी को कम करना है और साथ ही लिंग के नाम पर महिलाओं और पुरुषों के बीच जो अंतर पैदा किया गया है उसे अगर मिटाना नहीं तो कम करना ज़रूर है। मेरे लिए यह बहुत ख़ुशी की बात है कि ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन के मेरे साथी श्री रोहित खेड़ा, जनाब सिराजुद्दीन क़ुरैशी और श्री रंजन मुखर्जी ने इस पुस्तक की तैयारी और प्रकाशन दोनों में असाधारण रुचि दिखाई है।

इस पुस्तक की संकलनकर्ता अज़रा नक़वी एक बहुमुखी साहित्यकार हैं। वह एक कवयित्री, लेखिका और अनुवादक हैं और महिलाओं से जुड़े सामाजिक कार्यों में सक्रिय रही हैं। इनकी अब तक दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वह एक ऐसे परिवार से ताल्लुक रखती हैं जहां मातृभूमि से प्यार, लोगों से दोस्ती, उच्च नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना और सामाजिक सुधार बुनियादी हैसियत रखते हैं। कविता और साहित्य भी उनकी घुट्टी में हैं। विदेश में तीन दशक से अधिक समय बिताने के बाद, वह मातृभूमि की ख़ुशबू की तलाश में कुछ साल पहले ही भारत लौटी हैं और लेखन और संकलन में व्यस्त रहती हैं।

मुझे आशा है कि यह किताब **'मेरे वतन की ख़ुशबू'** नई और पुरानी उर्दू शायरात के अपने वतन हिंदुस्तान के प्रति नेक जज़्बात और एहसासात को पाठकों तक पहुँचाने में सफल होगी।

प्रो. अख़्तरुल वासे

चेयरमैन,

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन, नई दिल्ली

प्रस्तावना

भारत को मादरे-वतन या भारत माता कहते हैं लेकिन हम जब उर्दू शायरी में अपने वतन की रंगारंग संस्कृति, यहाँ की मिट्टी की ख़ुशबू, देशभक्ति के जज़्बे की तरंग की बात करते हैं तो शायरों के नाम ही नज़र आते हैं शायरात का ज़िक्र बिल्कुल नहीं होता। मातृभूमि की बेटियाँ जिनके अस्तित्व और स्वभाव में हिंदुस्तान न केवल अपनी धरती की ख़ुशबू, मौसमों, इतिहास, रीति-रिवाजों, गीत-संगीत, हस्तकलाओं के रूप में रचा-बसा है बल्कि अपने मुल्क की संस्कृति के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। क्या उन्होंने अपने देश प्रेम की भावनाओं को शायरी में व्यक्त नहीं किया होगा? बिल्कुल किया होगा और किया भी है। "किया होगा" मैं इसलिए लिख रही हूँ कि एक अरसे तक उर्दू शायरी के संस्मरणों में औरत का कोई ज़िक्र ही नहीं होता था। न जाने अतीत की कितनी लेखिकाएं आज भी गुमनाम हैं। कितनी ही शायरात ऐसी हैं जिनकी मृत्यु के वर्षों बाद उनके पुत्रों या पौत्रों ने उनकी शायरी प्रकाशित की वरना वो भी गुमनाम ही रह जातीं।

उर्दू के पुराने संस्मरणों का तो ज़िक्र ही क्या, हमारे कुछ समकालीन लेखकों ने भी शायरात को लगभग पूरी तरह से नज़र अंदाज़ किया है। मीर तक़ी मीर ने शायरों का संस्मरण लिखा परन्तु शायरात का ज़िक्र करना या उसके शेर को अपनी किताब में शामिल करने लायक़ नहीं समझा। ये और बात है कि स्वयं उनकी बेटी शायरी करती थीं। बाद में शायरों के संस्मरणों में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं का ज़िक्र भी कभी-कभार किया जाने लगा। नवाब मुस्तफ़ा शेफ़्ता ने "गुलशन-ए-बेख़ार" में एक बहुत ही संक्षिप्त इतिहास और कुछ शायरात की शायरी को नमूने के तौर पर दर्ज कीं। मौलवी अब्दुल ग़फ़ूर निसाख कुछ क़दम आगे बढ़े और एक किताब लिखी जिसमें शायरात का संक्षिप्त उल्लेख एक परिशिष्ट के रूप में है। उसके बाद शायरात परिशिष्ट से बाहर निकलीं और

"शमीम-ए-सुख़न" और "तज़किरहुल-ख़्वातीन" आदि अस्तित्व में आए। 1944 में मोहम्मद जमील अहमद की किताब "तज़किरा-ए-शायरात-ए-उर्दू" प्रकाशित हुई।

महिलाओं ने अठारहवीं शताब्दी से उर्दू साहित्य में एक प्रमुख भूमिका निभानी शुरू कर दी थी। लेकिन 20वीं सदी की शुरुआत तक कई महिलाओं ने पारिवारिक और सामाजिक परंपराओं का लिहाज़ करते हुए अपने लेखन को अपने असली नाम से प्रकाशित नहीं कराती थीं। उनकी रचनाएं फलां की मां, फ़लाँ की बेटी के नाम से छपती थीं। प्रारम्भ में महिलाओं ने गद्य पर अधिक ध्यान दिया तथा सुधारवादी उपन्यासों एवं महिला पत्रिकाओं में लेख लिखे गए। प्रगतिशील साहित्य में भी गद्य (नस्र)में महिलाओं का नाम प्रमुख है, किन्तु पद्य (शायरी) में कोई प्रमुख नाम नहीं मिलता।

आज उर्दू साहित्य में नारी-लेखन का महत्व बढ़ गया है। नारी-साहित्य और नारीवाद पर लेख लिखे जाते हैं और गोष्ठियाँ होती हैं। आज की ज्ञानी, आत्मविश्वासी लेखिकाएं पद्य और गद्य में हर विषय पर खुलकर लिख रही हैं। महिलाओं ने इस मुक़ाम तक पहुंचने के लिए एक लंबा सफ़र तय किया है और अब महिलाएं ख़ुद अपने साहित्य पर शोध कर रही हैं और अपने इतिहास का संकलन कर रही हैं।

इस किताब **"मेरे वतन की ख़ुशबू"** में हमारा प्रयास रहा है कि उर्दू की कुछ नई और पुरानी शायरात की शायरी में हिंदुस्तान का रंग व रूप देखें। देशभक्ति की शायरी केवल हिंदुस्तान की जय-जयकार वाली शायरी नहीं है। देशभक्ति की शायरी में अपने देश का इतिहास, महल, नदियाँ, मौसम, परंपराएँ, देवमालाएँ, रीति-रिवाज, उद्योग, वस्त्र, संगीत, लोक गीत, सब कुछ शामिल है जो शायरी के ताने-बाने में पिरोया हुआ होता है। देशभक्ति की शायरी में वे सभी सपने और उम्मीदें शामिल हैं जो हमने अपने देश के लिए देखे थे और देखते हैं, जिनमें कहीं-कहीं हार के भी सपने हैं। उर्दू शायरात ने हिंदुस्तान के बारे में केवल विषयगत शायरी नहीं की है बल्कि अन्य भावनाओं को शायरी के द्वारा अभिव्यक्ति में भी हिंदुस्तान रचा-बसा हुआ है। इस चयन में अधिकतर नज़्में सम्मिलित हैं क्योंकि इस शैली में किसी विषय को पूर्ण रूप से समाविष्ट किया जा सकता है। इसमें पाबंद नज़्में और आज़ाद नज़्में दोनो शामिल हैं।

इस पुस्तक में नई पुरानी बहुत से शायरात की शायरी है। आज़ादी से पहले का और आज़ादी के बाद का हिंदुस्तान उनकी नज़्मों में मौजूद है। मैं कुछ शायरात का यहाँ ज़िक्र करना चाहुँगीः

सबसे पहले तो आपको उर्दू की पहली साहिबे-दीवान शायरा लुत्फ़ुन्निसा इम्तियाज़ (जिनके दीवान की रचना 1779 में हुई) इस चयन **"मेरे वतन की ख़ुशबू"** में होली के रंग बिखेरती नज़र आती हैं।

ज़े. ख़े. शीन (1894-1922), इन तीन अक्षरों के पर्दे में छुपी एक बेहद ज़हीन, क़ाबिल, संवेदनशील और स्वाभाविक शायरा थीं जिनको लोग औरतों का अल्लामा इक़बाल कहते थे, जो उर्दू के अलावा फ़ारसी में भी शायरी करती थीं। उनकी मौत पर सज्जाद हैदर यलदरम ने लिखा थाः

"वह एक अंदलीब (बुलबुल) थी जो क़फ़स (क़ैदख़ाना) में पैदा हुई, क़फ़स में थी और क़फ़स ही में दम तोड़ा।"

ज़े. ख़े. शीन यानी ज़ाहिदा ख़ातून शेरवानिया जो कभी नादिर कभी नुज़हत और कभी सुख़नवर ख़ातून के नाम से अपनी शायरी पत्रिकाओं में छपाया कराती थीं, अपने पुरखों की रियासत के गाँव भीकमपुर (ज़िला अलीगढ़) में पैदा हुईं, वहीं अपनी कोठी "ज़फ़र मंज़िल" में सारी उम्र रहीं। उनके पिता नवाब सर मुज़म्मिलुल्लाह ख़ाँ शेरवानी भीकमपुर के नवाब थे। वह घर की चारदीवारी में रह कर अपने नवाबी घराने की रिवायत भी निभाती रहीं, अपना नाम छुपा कर शायरी करती रहीं और लेख लिखती रहीं। उनकी रचनाएँ और नज़्में 1911 से उर्दू अख़बारों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं थीं। ये किसी पर्दे में रहने वाली अल्हड़ लड़की की भावुक शायरी या महिलाओं के सामान्य विषयों पर लिखे गए लेख नहीं थे। यह एक ज्ञानी और बुद्धिमान शायरा और लेखिका के वैश्विक समस्याओं, देश और समाज के सियासी और सामाजिक स्थिति पर लिखी गई रचनाएँ थी जो बहुत लोकप्रिय थीं। ज़ाहिदा बाल्कन युद्ध, त्रिपोली युद्ध, बंगाल विभाजन, नेपोलियन, कानपुर मस्जिद की शहादत, स्वदेशी आंदोलन, महिलाओं का पिछड़ापन, किसानों और श्रमिकों की स्थिति से सबसे अधिक चिंतित थीं।

हिंदुस्तान के स्वतंत्रता संग्राम के हवाले से उस दौर की कई शायरात की नज़्में मिलती हैं। स्वतंत्रता सेनानी सैफ़ुद्दीद किचलू की बेगम सआदत बानो किचलू शायरा थीं और उनकी शायरी देशभक्ति और राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति है। उनकी शायरी की कोई किताब तो नहीं है लेकिन कुछ पत्रिकाओं में उनकी नज़्में मिलती हैं इनके कुछ अंश इस किताब में शामिल हैं। उसी ज़माने की कई और शायरात की नज़्में भी इसमें शामिल हैं। ख़दीजा बेगम एक सम्मानित सीमावर्ती परिवार से थीं। उनके पिता बन्नू जिले में स्कूल निरीक्षक थे। वह पर्दे में रहने वाली महिला थीं। 1931 में रावलपिंडी में जब पंजाब प्रांत की चुनावी सभा हुई थी जिसमें जगतगुरु स्वामी शंकराचार्य, हकीम अजमल ख़ान और लाला लाजपत राय शामिल थे। ख़दीजा ने खद्दर का बुर्क़ा पहन कर इस सभा में भाषण दिया और एक नज़्म भी पेश की थी जिसका कुछ भाग इस किताब में शामिल है। ख़दीजा बेगम न केवल स्वयं हमेशा खद्दर पहनती थीं बल्कि बन्नू में गली-गली और घर-घर जाकर महिलाओं को चरखा चलाने, खद्दर पहनने और स्वदेशी आंदोलन को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती थीं। इसी दौर की कुछ और शायरात ज़ेब उस्मानिया (लुधियानवी) और शहज़ादी कुलसुम का कलाम भी इस इंतिख़ात में शामिल है।

बानो ताहिरा सईद (1922 में जन्मी) ईरानी मूल की महिला थीं जिनका जन्म भारत में हुआ था, उनके पिता ईरानी थे, वे भारत के विभिन्न कॉलेजों में अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर थे। बानो ताहिरा सईद की शिक्षा आगरा, लखनऊ और तेहरान में हुई थी। वह अपने पिता के साथ ईरान वापस चली गई थीं लेकिन हैदराबाद के ब्रिगेडियर सईद से उनकी शादी हुई और ताहिरा वापस भारत लौट आईं और बीसवीं सदी के आख़िरी दशक तक हैदराबाद में रहीं। उन्होंने उर्दू, फ़ारसी और अंग्रेज़ी में शायरी करती थीं और उर्दू में अफ़साने भी लिखे। उनकी शायरी और अफ़सानों की कई किताबें प्रकाशित हुईं जिनमें से एक किताब "यह आशियाँ हमारा" देशभक्ति की नज़्मों की है। इसी ज़माने की कई और हैदराबाद की शायरात की नज़्में इस किताब में शामिल हैं जैसे अज़मत अब्दुल क़य्यूम, शफ़ीक़ फ़ातिमा शेरी और राबिया बरनी।

पिछले दशकों में दिवंगत होने वाली कुछ प्रमुख शायरात जैसे साजिदा ज़ैदी, सैयदा फ़रहत, मसऊदा हयात की नज़्में भी इस किताब में शामिल हैं। साजिदा ज़ैदी उर्दू शायरी की एक चमकता सितारा हैं। सैयदा फ़रहत ने बच्चों के लिए देशभक्ति की कई नज़्में लिखी हैं। मसऊदा हयात की एक किताब "तस्वीर-ए-वतन" बच्चों के लिए लिखी गई दशभक्ति की नज़्मों पर आधारित है। मौजूदा शायरात में रफ़िया शबनम आबिदी, कहकशाँ तबस्सुम, नुसरत मेहदी, मलका नसीम, असना बद्र और अन्य शायरात का प्रतिनिधित्व है। इनकी शायरी में देश प्रेम की नज़्में भी हैं और अन्य विषयों एवं शायराना इज़्हार में भी उनकी शायरी में इस धरती की ख़ुशबू और रंग बसे हुए हैं। रफ़िया शबनम आबिदी फ़ारसी की प्रोफ़ेसर हैं और गद्य एवं पद्य दोनों में उनके कार्य मूल्यवान हैं। उन्होंने एक किताब "मराठी अदबःएक तआरुफ़" (मराठी साहित्यःएक परिचय) भी संकलित की है।

हिंदुस्तान और देशभाक्ति के हवाले से पुरानी और नई उर्दू शायरात की तरह-तरह की और अनोखी शायरी इस संग्रह **"मेरे वतन की ख़ुशबू"** में प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

अज़रा नक़वी
ग्रेटर नोएडा
26 सितम्बर 2022

होली

लुत्फ़ुन्निसा इम्तियाज़

1761-

दिखलाए किस मज़े से अब के बहार होली
खेले हैं सब जमा हो क्या गुल-ए-इज़ार[1] होली

सारी परी-रुख़ाँ[2] मिल कैसी मचाएँ धूमें
रंग ज़र्द-ओ-सुर्ख़[3] लेकर खेलें निगार[4] होली

सोने की थालियों में रख के अबीर-ओ-अबरक
भर मूठियाँ में फेंकें करके पुकार होली

शीशों में ज़ाफ़रान का रंग-ए-शहाब[5] भर कर
ऊपर से क़हक़हों के है बार-बार होली

---

[1] सुंदर, प्रिय
[2] सुंदर और ख़ूबसूरत लोग
[3] पीला और लाल
[4] मन मोहक
[5] गहरा लाल रंग

तराना-ए-इत्तिहाद

ज़े. ख़े. शेरवानिया

1894-1922

जन्नत की दीद से है दिल शादमाँ हमारा
शुक्र-ए-ख़ुदा वतन है हिंदोस्ताँ हमारा

रोशन है जौहरी पर मोती की क़द्र-ओ-क़ीमत
तारीख़-दान-ए-आलम [1] है क़द्र-दाँ हमारा

कहते हैं हमको "हिंदी" हुब्बे-वतन है ईमाँ
क्या पूछते हो दीन-ओ-नाम-ओ-निशाँ हमारा

आलामे-मुसलमाँ [2] पर बोले तड़प के हिंदू
सूद-ओ-ज़ियाँ [3] है इनका सूद-ओ-ज़ियाँ हमारा

दर्द-ए-निफ़ाक़े [4] दम-उल-अख़वैन [5] चाहता था
शाकिर है क़ातिलों का आरामे-जाँ हमारा

---

[1] विश्व के इतिहासकार
[2] मुसलमान की मुसीबत
[3] नफ़ा और नुक़सान, बुरा-भला
[4] वैमनस्य का दर्द
[5] एक लाल गोंद का नाम जो अक्सर रंगने और दवा में डालने के काम आता है

रोते हैं हम जो मिलकर गंगो-जमन की सूरत
शादाब[1] होके हँसता है गुलसिताँ हमारा

हो जाए काश साबित रूहों की कूचा-गर्दी[2]
बन जाए काश गाँधी हर नौजवाँ हमारा

काफ़ी है तहत-ओ-फ़ौक़[3] दुनिया के फूँकने को
नारे-अलम[4] हमारी दूदे-फ़ुगाँ[5] हमारा

जाँ से, बदन से, ख़ूँ से, हिंदोस्ताँ के हैं हम
हैरत है, क्यूँ नहीं है हिंदोस्ताँ हमारा

दहशत से होंगे औंधे सारे जहाँ के झण्डे
जिस दम उठाएगा सर मुल्की निशाँ हमारा

कोह-ए-गिराँ[6] झुकेंगे बहर-ए-रवाँ[7] रुकेंगे
अच्छा है हो न ज़ाहिर जोशे-निहाँ हमारा

होगा शिकस्ता-साज़[8] अय्यारी-ए-अजानिब[9]
अच्छा है गर न टूटे क़ुफ़्ले-दहाँ[10] हमारा

---

[1] हरा(भरा, प्रफ़ुल्ल
[2] मारा-मारा फिरना, आवारा फिरना
[3] नीच-ऊँच
[4] मुसीबत की आग
[5] दर्द की दुहाई
[6] भारी पहाड़, बुलंद पहाड़
[7] बहती हुई नदी, बहता हुआ समुन्दर
[8] चूर-चूर
[9] ग़ैरों का छल, धूर्तता, चालाकी
[10] ख़ामोशी

है ख़्वाबे-हिंद ही से भेड़ों का नाच क़ायम
अच्छा है गर न चौंके शेरे-ज़ियाँ[1] हमारा

ज़ोरे-वफ़ा[2] से होंगे हम कामराँ[3] यक़ीनन
आदिल[4] है फ़ैज़-गुस्तर[5] है हुकमराँ हमारा

---

[1] एक भयंकर शेर अर्थात् बहादुर आदमी
[2] मोहब्बत के ज़ोर से
[3] कामयाब
[4] इंसाफ़ करने वाला, न्याय करने वाला
[5] लाभ पहुँचाने वाला

आह गोखले

क्यूँ यास[1] हो न मुझको बहबूदे-हिंदियाँ[2] से
सुनती हूँ गोखले भी रुख़सत हुए जहाँ से

कब तक बँधा रहेगा ताँता मुसीबतों का
कब तक निजात होगी इस सख़्त इम्तिहाँ से

बढ़ती हुई उम्मीदें, उठती हुई उमंगें
मिट्टी में मिल गईं सब इस मर्गे-नागहाँ[3] से

अफ़सोस मुल्क भर में हो इक चिराग़ वो भी
बुझ जाए जलते-जलते सोज़े-ग़मे-निहाँ[4] से

माता की पहले सेवा सेहत की फ़िक्र पीछे
ऐसा सपूत भारत अब लाएगी कहाँ से

हुब्बे-वतन हमें भी और गोखले को भी थी
पर था वहाँ तअल्लुक़ दिल से यहाँ ज़बाँ से

ऐ काश हो ये कलमा फिर हिर्ज़े-जाँ[5] हमारा
हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्ताँ हमारा

---

[1] निराशा

[2] हिंदुस्तान की उन्नति

[3] वह मृत्यु जो अचानक आ जाये

[4] छुपी हुई ग़म की जलन

[5] बहुत ही प्रिय वस्तु

करती है साफ़ इशारा तस्वीर गोखले की
पछताए! की जिन्होंने तहक़ीर[1] गोखले की

सरगोशियाँ[2] करेगी इक रोज़ आस्माँ से
हाँ हाँ यही अधूरी तन्वीर गोखले की

तालीमे-इब्तिदाई[3] होकर रहेगी लाज़िम
रोशन करेगी आँखें तन्वीर गोखले की

अफ़्रीक़ा में न होगा फ़र्क़े-सपेदो-अस्वद[4]
लाएगी रंगे ख़ूनीं तक़रीर गोखले की

हुब्बे-वतन को जुज़्वे-ईमाँ[5] कहा गया है
वाइज़! समझ के कीजो तकफ़ीर गोखले की

ऐ मोतरिज़[6]! हिसारे-बातिल हो लाख मोहकम
कर लेगी पुर सदाक़त[7] तस्ख़ीर[8] गोखले की

मत आज़मा कि हक़ ने गिरतों को कैसे थामा
मन जर्रबल मुर्जर्रिब हल्लत बिहिन्नदामा

---

[1] अपमान
[2] चुपके चुपके बातें करना
[3] प्राथमिक शिक्षा
[4] काले गोरे का भेद
[5] आस्था का हिस्सा
[6] आपत्तिकर्ता, रोक-टोक करने वाला, आलोचक
[7] सच्चाई
[8] मुग्ध करना सच्चा

तारों से गुफ़्तगू

(नज़्म का अंश)

सआदत बानो किचलू

पुर-लुत्फ़[1] क्या समाँ है तुम्हारे बहार का
निकला मगर न हैफ़[2] मेरे दिल का मुद्दआ
तुम से गरज़ है मुझको न कुछ आसमान से
मतलब है अपने मुल्क से हिंदोस्तान से
क्या वह भी दिन ख़ुदा कभी मुझको दिखाएगा
हिंदोस्तान तुम्हारी तरह जगमगाएगा
अहले-ज़माना देखेंगे हिंदोस्तान को
इसकी चमक लुभाएगी सारे जहान को
प्यारे वतन के नाम पे जाऊँ निसार मैं
उजड़े चमन में देखूँ इलाही बहार मैं

[1] सुखद, सुहावना
[2] आह, हाय

गाँधी जी

(नज़्म का अंश)

बना है सबके दिलों में तेरा मकाँ गाँधी
है तेरी मद्दह-ओ-सना[1] दर्द हर ज़बाँ गाँधी
हर इक तरफ़ हैं अक़ीदत[2] के तेरे फूल खिले
न आएगी कभी इस फूल पे ख़िज़ाँ[3] गाँधी
फँसे हैं सख़्त मुसीबत में अहले-अमृतसर
अयाँ[4] है आप पर उनका ग़मे-निहाँ[5] गाँधी
यक़ीन है गौहरे-मक़सूद[6] उनको मिल जाए
अगर हों आप हक़ीक़त के तर्जुमाँ[7] गाँधी
कुछ ऐसी बात करें अपनी दस्तगीरी से
जो क़ैद में हैं पड़े वो छुटें असीरी[8] से

[1] प्रशंसा और स्तुति, बड़ाई
[2] श्रद्धा
[3] पतझड़
[4] स्पष्ट, ज़ाहिर
[5] छिपा ग़म
[6] लक्ष्य, मंज़िल
[7] प्रतिनिधि
[8] क़ैद

रुबाई (चौपाई)

इत्तिहादे-हिंदू-मुस्लिम [1] ख़ुशी की बात है
क़ाबिल-ए-अफ़सोस है गो सख़्त हालत क़ौम की
सैकड़ों अफ़राद ग़ाफ़िल हैं कुछ परवा नहीं
लाजपत जीवन ने रख ली लाज और पत क़ौम की

[1] हिंदू-मुस्लिम एकता

नज़्म का अंश

ख़दीजा बेगम

मसरूर[1] गो बज़ाहिर रहती हूँ मैं ज़मन[2] में
कितना है वक़्त मेरा सैरे-गुले-चमन में
अग़यार[3] ने बिठाया सिक्का मेरे वतन में
इससे न चैन दिल में न शांति है मन में

जाकर चमन में सुनती बुलबुल के हूँ तराने
कोयल की मीठी कू-कू आती है जी लुभाने
आती हूँ गाह[4] चमन से बस्ती में दिल लगाने
लेकिन हो शांति क्या जी को किसी बहाने

मिलती है दर्दो-ग़म से कुछ भी अगर फ़राग़त[5]
होता है गर ज़रा सा भी कम मलाले-फ़ुर्क़त[6]

---

[1] आनंदित, ख़ुश
[2] ज़माना, संसार
[3] अनजान लोग
[4] कभी-कभी
[5] मुक्ति, छुटकारा
[6] जुदाई का ग़म

हसरत[1] भरी निकलती मुँह से है यह इबारत
फिर औज[2] पर इलाही कब होगा प्यारा भारत

---

[1] हार्दिक इच्छा, दिली ख़्वाहिश
[2] ऊँचाई, उन्नति, प्रतिष्ठा

बिरादरान-ए-वतन[1] से

शहज़ादी कुलसूम

1928-1949

मुल्क की हालत पे सीनों से धुआँ उठता नहीं
साज़े-दिल ख़ामोश हैं शोरे-फ़ुग़ाँ[2] उठता नहीं
किस लिए आँखों से तूफ़ाने-निहाँ[3] उठता नहीं
फूल रौंदे जा रहे हैं बाग़बाँ उठता नहीं
बे-हिसी[4] की इंतिहा है होश में आते नहीं
ज़िल्लतों पर ज़िल्लतें होती हैं शरमाते नहीं
शोला-ए-एहसास बुझता है हवा दे दो इसे
क़ौमियत दम तोड़ती है कुछ दवा दे दो इसे
मुल्क मिटने को है पैग़ामे-बक़ा[5] दे दो इसे
मुतमइन[6] बैठे हो दिल सीने में घबराता नहीं
क़ौम के दम तोड़ने पर भी तरस आता नहीं

---

[1] देशवासियों से
[2] विलाप, मातम
[3] छिपा हुआ तूफ़ान
[4] संवेदनहीन
[5] सलामती का संदेश
[6] संतुष्ट, इत्मीनान से

साँस लेकर इस फ़ज़ा में रूह घबराती नहीं
जौहरे एहसासे ख़ुद्दारी को शर्म आती नहीं
तुमको नादारी[1] वतन की ख़ाक तड़पाती नहीं
ये ग़ुलामी की बला हैरत है खा जाती नहीं
ज़िंदगी को दावते-सद-मर्ग देना चाहिए
मौत की आग़ोश में आराम लेना चाहिए
छोड़ दो नाकामी-ए-क़िस्मत के शिकवे छोड़ दो
कुछ भी हिम्मत है तो ये तौक़ो-सलासिल[2] तोड़ दो
औज की जानिब निगाहे-शर्मगीं को मोड़ दो
रिफ़अते-माज़ी[3] से फिर तक़दीरे-फ़र्दा[4] जोड़ दो
सच तो ये है क़ौम के बस तुम अमलबरदार[5] हो
ता-ब-के[6] यह ख़्वाबे-ग़फ़लत[7] सो चुके बेदार हो

[1] ग़रीबी, तंगहाली
[2] बेड़ी और हथकड़ी
[3] अतीत की प्रतिष्ठा
[4] आने वाले समय की तक़दीर
[5] मार्गदर्शक
[6] कब तक
[7] असंवेदनशीलता, अनभिज्ञता, बेख़बरी

बच्चों का पैग़ाम[1] वतन के नाम

ज़ेब उस्मानिया

1913-

हम सुल्ह-ओ-मुरव्वत[2] का जब हाथ बढ़ा देंगे
इक उम्र के रूठों को आपस में मिला देंगे

मुल्ला-ओ-बरहमन[3] अब मायूस न हों हरगिज़
हम मस्जिद-ओ-मंदिर के झगड़ों को चुका देंगे

क्यूँ दुख हो ग़रीबों को हम किस लिए हैं आख़िर
जो उनको सताएँगे हम उनको मिटाएँगे

आपस की अदावत[4] से हर डूबती कश्ती को
एहसान-ओ-मुरव्वत से हम पार लगा देंगे

फिर ग़ैर न समझेंगे इक दूसरे को इंसाँ
जब उनको मोहब्बत का आईना दिखा देंगे

मज़हब हो कोई लेकिन है हिंद वतन अपना
हम 'ज़ेब' वतन की हर बिगड़ी को बना देंगे

---

[1] संदेश
[2] मेल, मिलाप, शांति
[3] मुस्लिम और हिंदू
[4] दुश्मनी

आज़ादी के बाद

अज़मत अब्दुल क़य्यूम ख़ाँ

1922-

दोस्तो! आगे बढ़ा, जम्हूरियत[1] का कारवाँ
आज ज़िंदा हो गई है अज़मते-हिंदोस्ताँ
आ गई है आज क़दमों में बिसाते-कहकशाँ
और यह मंज़िल नहीं, है सिर्फ़ क़दमों का निशाँ

जायज़ा लेना है अब बदले हुए हालात का
ज़िंदगी का, वक़्त का, किरदार का, जज़्बात का
सामने है मुल्क की बेरोज़गारी का सवाल
ग़ुर्बतो-इफ़लास[2] की आग़ोश में हैं माह-ओ-साल
आज भी पर्दों में है लैलाए-हस्ती का जमाल
कितने दिल मग़मूम हैं कितनी तमन्नाएँ निढ़ाल

हाँ बढ़ो, आगे बढ़ो, वह सामने है रहगुज़र
अज़्मो-हिम्मत का बना लें आज अपना हमसफ़र

ज़िंदगी को ज़िंदगी का नाम देने के लिए
राहतों का, इशरतों का, जाम देने के लिए

[1] लोकतंत्र
[2] ग़रीबी

वक़्त का, तारीख़ का, पैग़ाम देने के लिए
कामरानी का नया इनआम देने के लिए

जज़्बा-ए-ख़िदमत को अब बेदार होना चाहिए
सख़्त मेहनत के लिए तैयार होना चाहिए

आज भी हालात को अपने बदल सकते हैं हम
ज़िंदगानी के नए साँचों में ढल सकते हैं हम
इरतिक़ा[1] की राह पर बे-ख़ौफ़ चल सकते हैं हम
लड़खड़ा कर भी ज़माने में संभल सकते हैं हम

हो अमल अपना हर इक तन्क़ीद[2] का ख़ुद ही जवाब
ख़ुल्द-ज़ारे-हिंद[3] को देकर बहारों का शबाब

हर तरफ़ फैलाएँगे इल्मो-हुनर की रौशनी
सनअतों[4] को बख़्श देंगे आबो-ताबे-ज़िंदगी[5]
कारख़ानों से बढ़ाएँगे वतन की दिलकशी
लहलहाती खेतों में झूम उठेगी ज़िंदगी

गुनगुनाती इशरतें[6] देकर दिले-ग़मनाक[7] को
हम-नवा[8] अपना बनाकर जुर्अते-बेबाक को

---

[1] तरक़्क़ी
[2] आलोचना
[3] हिंदुस्तान के घास के मैदान
[4] उद्योग
[5] ज़िंदगी की चमक-दमक
[6] ऐशो-आराम
[7] दुखा दिल
[8] साथी

अज़्मो-इस्तिक़लाल[1] से बदलेंगे तक़दीरे-हयात[2]
कोशिशे-पैहम[3] से हो सकती है तामीरे-हयात

देखते हैं आज भी हम अक्से-तन्वीरे-हयात
वो जो मुस्तक़बिल के हाथों में है तस्वीरे-हयात

एक पैग़ामे-अमल ये वक़्त की रफ़्तार है
दहर में राज़े-तरक़्क़ी अज़मते-किरदार है

[1] दृढ़ निश्चय
[2] ज़िंदगी की तक़दीर
[3] निरंतर प्रयास

हम लोग

अज़मत अब्दुल क़य्यूम ख़ान

हयाते-नौ [1] का फ़साना सुनाएँगे हम लोग
तलाश करके बहारों को लाएँगे हम लोग

मुसाफ़िराने-शबे-जिंदगी की राहों में
चिराग़े-फ़िक्रो-नज़र के जलाएँगे हम लोग

हमारे चाक गिरेबाँ को देखने वालो
वतन को रश्के-गुलिस्ताँ [2] बनाएँगे हम लोग

जहाँ को अम्नो-मोहब्बत का वास्ता देकर
मह-ओ-नुजूम [3] की महफ़िल सजाएँगे हम लोग

ज़मीरे-फ़ितरते-इंसानियत को चौंका कर
उरूजे-क़िस्मते-आदम दिखाएँगे हम लोग

वह गीत जिससे बहारों की रूह जाग उठे
रुबाबे-ज़ीस्त के तारों पे गाएँगे हम लोग

---

[1] नया जीवन
[2] जिस पर बाग़ को भी जलन हो
[3] चाँद तारों की महफ़िल

शुकूक-ओ-वहम[1] की तारीकियों से क्या लेना
यक़ीन सुब्ह की राहों पे जाएँगे हम लोग

ख़्यालो-फ़िक्र के ख़्वाब-आफ़रीं[2] धुंधलकों में
ज़ियाए-हुस्ने-सहरताब [3] लाएँगे हम लोग

तसव्वुरात [4] की दुनिया हसीं सही लेकिन
हक़ीक़तों को हसीं-तर बनाएँगे हम लोग

ख़ुलूसकार[5] से मिलती है ज़िंदगी 'अज़मत'
ख़ुलूसकार को रहबर [6] बनाएँगे हम लोग

---

[1] शक और भ्रम
[2] नींद लाने वाला
[3] भोर की सुंदर रौशनी
[4] कल्पना, काल्पनिक
[5] सच्चा दोस्त
[6] मार्गदर्शक

हैंडलूम

बानो ताहिरा सईद

1922-

यह "दस्ती पारचा बाफ़ी[1]" हमारे घर की सनअत[2] है
यह सनअत इफ़्ख़ारे-क़ौम[3] है भारत की अज़मत है

यही सनअत हमें बख़्शेगी ख़ुशियाँ और ख़ुशहाली
इसी फ़न से हमारे घर में होगी फ़ारिग़ुल-बाली[4]

हमारी दस्त-बाफ़ी[5] भा गई है ज़ौक़ वालों को
बहुत मरग़ूब[6] हैं कपड़े हमारे मह-जमालों[7] को

बुनावट में नुमायाँ चन्द सदियों के ख़ज़ाने हैं
एलोरा के नमूने हैं अजन्ता के फ़साने हैं

कहीं हैं नक़्श मुग़लों, राजपूतों की सक़ाफ़त[8] के
कहीं मंज़र हैं दिलकश हिंद की क़ौमी वजाहत के

---

[1] हाथ से कपड़ा बुनने का काम या पेशा
[2] पेशा
[3] क़ौम का गर्व
[4] ख़ुशहाली, आज़ादी
[5] हाथ से कपड़ा बुनना
[6] ख़ूबसूरत, दिलरुबा, महबूब, प्यारा
[7] चांद के जैसा हसीन
[8] संस्कृति, सभ्यता

ज़बाने-ज़द[1] हो रही है आजकल उनकी दिल-आवेज़ी[2]
बड़ा दिलकश है उन कपड़ों का तर्ज़े-रंग-आमेज़ी

वो अमरीका हो या यूरोप हर इक जा इसका चर्चा है
हमारी दस्त-बाफ़ी का जहाँ में बोलबाला है

मुबारक 'ताहिरा' हफ़्ता मनाना दस्तकारों को!
ख़ुदा आबाद रक्खे मुल्क के इन होनहारों को!

---

[1] लोकप्रसिद्ध, जो सबकी ज़बानों पर हो

[2] खूबसूरती

सामराज की शिकस्त

(गोवा की जीत पर)

बानो ताहिरा सईद

मादर-ए-हिंद के माथे की शिकन दूर हूई
चार सौ साल की "ज़िल्लत[1] का निशाँ!"

शुक्र है मग़रिबी[2] ताक़त की उफ़ूनत[3] भरी साँस
टूट कर डूब गई, ख़त्म हुआ अफ़साना!

अब गोवा में न कोई "ग़ैर" जमाएगा क़दम
हुर्रियत[4], अज़मत व इज़्ज़त का मुक़द्दस[5] परचम

ख़ुशनुमा साहिली मैदानों पे लहराएगा!
जल परी गाएगी आज़ादी का गीत

लहरें उठ उठ के सलामी देंगी
गुनगुनाएँगी हवाएँ कि गया दौर-ए-ख़िज़ाँ[6]

---

[1] अपमान, अनादर
[2] पश्चिमी
[3] दुर्गन्ध, बदबू, सड़ाँध
[4] स्वतंत्रता, स्वाधीनता
[5] पवित्र
[6] पतझड़ की ऋतु

मादर-ए-हिंद के होंटों पे तबस्सुम[1] होगा
और पेशानी[2] पे सिंदूर का एक नुक़्ता-ए-सुर्ख़[3]

उस सिपाही की हमें याद दिलाएगा सदा
ख़ून का जिसने दिया बाग़-ए-वतन को तोहफ़ा

गरचे गुमनाम रहा, दाद का तालिब न हुआ
आह! गुमनाम सिपाही तेरी तुर्बत[4] को सलाम

---

[1] मुस्कान, मंद हँसी
[2] माथा, ललाट
[3] लाल रंग की बिंदी
[4] क़ब्र, समाधि

सिपाही की शरीक-ए-ज़िंदगी[1]

बानो ताहिरा सईद

वतन की अंजुमन[2] में शम्अ बन के रौशनी दी है
पिघल कर क़ौम को मैंने बड़ी आसूदगी[3] दी है
मेरे ज़ब्ते-फ़ुगाँ[4] ने मुल्क के दिल को ख़ुशी दी है
ख़ुदा ने मुझको हिम्मत, मुस्कुराहट, सादगी दी है
शरीक-ए-ज़िंदगी हूँ देश भारत के सिपाही की

मैं दीगर[5] औरतों की तरह शिकवे कर नहीं सकती
ज़माने की शिकायत, नाज़, नख़रे कर नहीं सकती
गुज़रती जो भी है दिल पर मैं चर्चे कर नहीं सकती
हज़ारों मुश्किलें सह कर भी शिकवे कर नहीं सकती
शरीक-ए-ज़िंदगी हूँ देश भारत के सिपाही की

मुझे महसूस होता है कि मैं भारत की अज़मत हूँ
वतन की आबरू हूँ, आन हूँ, शौकत हूँ, ताक़त हूँ
मुजस्सम[6] मशरिक़ी[7] औरत हूँ तफ़सीरे-मोहब्बत[8] हूँ

---

[1] पत्नी
[2] संगठन, सोसाइटी, समाज
[3] समृद्धि, खुशहाली
[4] रोने से अपने आप को रोकना
[5] अन्य, दूसरी
[6] साक्षात
[7] पूरब का, एशियाई (अर्थात् हिंदुस्तानी)
[8] प्रेम की परिभाषा

मैं हूँ ससुराल की इज़्ज़त, मैं मैके की शराफ़त हूँ
शरीके-ज़िंदगी हूँ देश भारत के सिपाही की

फ़राइज़[1] की बिना पर "वह" बहुत मजबूर रहते हैं
रफ़ीके-ज़िंदगी[2] होकर भी अकसर दूर रहते हैं
हम उनकी नेक-नामी[3] पर मगर मग़रूर रहते हैं
ग़मे-फ़ुर्क़त[4] है लेकिन फिर भी हम मसरूर[5] रहते हैं
शरीक-ए-ज़िंदगी हूँ देश भारत के सिपाही की

भरोसा है ख़ुदा पर मुझको ख़ुद हूँ पासबाँ[6] अपनी
मैं ख़ुद बाँग-ए-जरस[7], ख़ुद ही अमीरे-कारवाँ[8] अपनी
शऊरे-पुख़्ता, मशअले-रहनुमा, फ़िक्रे-जवाँ अपनी
मैं तन्हाई की ख़ूगर[9] हूँ ख़मूशी दास्ताँ अपनी
शरीक-ए-ज़िंदगी हूँ देश भारत के सिपाही की

वतन की सरहदों पर मैं जमाए हूँ निगाहों को
हिफ़ाज़त जिनकी सौंपी जा चुकी है सूरमाओं को
ख़ुदा से इल्तिजा है सुन ले वो मेरी दुआओं को
सिपाही और वतन से दूर रक्खे कुल बलाओं को
शरीक-ए-ज़िंदगी हूँ देश भारत के सिपाही की

---

[1] कर्तव्य, उत्तरदायित्व
[2] जीवन भर का साथी, पति या पत्नी, बीवी या शौहर
[3] सुख्याति, सुप्रसिद्धि
[4] जुदाई का ग़म
[5] ख़ुश
[6] दरबान, चौकीदार, निरीक्षक
[7] क़ाफ़िले में बजने वाले घंटे की आवाज़
[8] दल का नेता
[9] आदी, अभ्यस्थ

ज़बाने-ज़द[1], नामे-नामी[2] है मेरा हिम्मत में जुर्अत में
नहीं झाँसी की रानी से मैं कम अज़्मो-शुजाअत[3] में
नहीं हूँ 'ताहिरा' कम चाँद[4] सुल्ताना[5] से इज़्ज़त में
उठा सकती हूँ मैं तलवार भारत की हिमायत[6] में
शरीक-ए-ज़िंदगी हूँ देश भारत के सिपाही की

---

[1] लोकप्रसिद्ध, जो सबकी ज़बानों पर हो
[2] शोहरत वाला
[3] दृढ़ संकल्प और साहस
[4] चाँद बीबी
[5] रज़िया सुल्ताना
[6] समर्थन

ज़ंजीर-ए-ग़ुलामी[1]

ज़ाहिदा ख़लीकुज़्ज़माँ 'ज़ाहिदा'

1915-1982

कहाँ तक ऐ सितमगर चर्ख़ तदबीरें[2] ग़ुलामी की
कि अब बारे-गराँ[3] हैं दिल को ज़ंजीरें ग़ुलामी की

वो बहारें, वो चमन, वो गुलशने-ईजादी कहाँ
ऐ ग़ुलामाबाद वह अब तेरी आज़ादी कहाँ

बहर-ओ-बर[4] तेरे वही और तू बे-इक़्तिदार[5]
एक ज़र्रे, एक क़तरे पर नहीं है इख़्तियार

पस्तियों[6] को इरतिक़ा[7] फिर जल्वा-ए-आग़ाज़ दे
काश मुस्तक़बिल[8] तेरा माज़ी[9] को फिर आवाज़ दे

---

[1] ग़ुलामी की ज़ंजीर
[2] उपाय
[3] भारी बोझ, बड़ी ज़िम्मेदारी
[4] ज़मीन और समुन्द्र, अर्थात: सारा संसार, पूरी दुनिया
[5] गद्दी से उतारना, पदच्युत करना
[6] कमज़ोरी
[7] तरक़्क़ी
[8] भविष्य
[9] अतीत

सीता

शफ़ीक़ फ़ातिमा शेरी

1937-

तेरा नाम ले कर सहर[1] जागती है
तेरे गीत गाती है तारों की महफ़िल
तेरी ख़ाके-पा[2] हिंद का राज़े-अज़्मत[3]
तेरी ज़िंदगी मेरे ख़्वाबों की मंज़िल
कहानी तेरी सुन के थर्रा उठी मैं
धड़कने लगा धीरे धीरे मेरा दिल

छुपाए हैं सीने में कुछ राज़ अपने
दकन के कोहिस्ताँ[4] की तपती चट्टानें
मुसाफ़िर कुछ आए थे इन जंगलों में
फ़ज़ा में हैं बिखरी हुई दास्तानें
वह हमदर्द आँखें वो बातों में जादू
वह मज़बूत बाज़ू वह भारी कमानें
वह इक ख़ुद-फ़रामोश[5] पी की पुजारन
कटी पत्तियों की नदी का किनारा

---

[1] सुबह
[2] पैरों की धूल, पांव की मिट्टी
[3] प्रतिष्ठा का राज़
[4] पर्वत श्रृंखला, पर्वतमाला
[5] ऐसा अचेत जो अपने को भी भूल जाये

निगाहों से छनता हुआ नूरे-उल्फ़त[1]
जबीं पर फ़रोज़ाँ[2] वफ़ा का सितारा
बरसते हुए फूल ख़ुशियों के हर-सू[3]
ज़माना भी था रुक के महवे-नज़ारा[4]

वो पैहम[5] सफ़र वो हवादिस[6] के तूफ़ाँ
वो पैरों में छाले वो हँसती निगाहें
कभी दिल को ग़ुर्बत[7] में बहलाए रखना
कभी देस की याद में सर्द आहें
रही साल-हा-साल[8] तू जादा-पैमा[9]
ये धुन थी कि तय हों रियाज़त[10] की राहें

मगर आज़माइश थी कुछ और बाक़ी
अभी सामने और भी इम्तिहाँ थे
असीरी फिर इक राक्षस की असीरी[11]
बहुत दूर तुझसे तेरे पासबाँ[12] थे
तेरी पाक फितरत मगर इक सिपर[13] थी
तेरे सामने राक्षस ना-तुवाँ[1] थे

---

[1] प्यार की रौशनी
[2] प्रकाशमान, रौशन
[3] हर दिशा
[4] देखने में व्यस्त
[5] निरंतर, लगातार
[6] हादसे, दुर्घटनाएँ, मुसीबतें
[7] मुसीबत, परेशानी
[8] बरसों, मुद्दतों, बहुत अधिक समय तक
[9] पथिक, राहगीर, मुसाफ़िर
[10] मेहनत, परिश्रम
[11] क़ैद, गिरफ़्तारी, नज़र बंदी
[12] चौकीदार, निरीक्षक
[13] ढाल, कवच

उठे फिर तेरा नाम लेकर जवाँ कुछ
जरी हौसलामंद सच्चे जियाले [2]
हिला डाले ऐवान[3] इक सल्तनत के
तेरे पास्बाँ थे बड़े आन वाले
तेरी वापसी कर रही थी ये ऐलान
कि मिटते नहीं ज़ुल्मतों से उजाले

सहे जो सितम बन गए सब फ़साना
तलाफ़ी[4] का अब आ रहा था ज़माना
हुई आह लेकिन ये कैसी तलाफ़ी
दोबारा मिला जंगलों में ठिकाना

सलीब एक बाक़ी थी जो मामता की
उसे भी तो लाज़िम था तन्हा उठाना
अजब हैं ये असरारे-वस्ल-ओ-जुदाई[5]
कि मंज़िल को पाकर भी मंज़िल न पाई
ये कैसा सितम था कि इफ़्फ़त[6] की देवी
सबूत अपनी इफ़्फ़त का देने को आई
वो शोले की मानिंद शोलों से गुज़री
वो बिजली सी बनकर ज़मीं में समाई

---

[1] अशक्त, निर्बल, कमज़ोर
[2] दिलेर, बहादुर
[3] महल, राजभवन, शाहीमहल
[4] क्षतिपूर्ति, भरपाई
[5] मिलने और बिछड़ने का भेद
[6] पवित्र, सदाचार, संयम, शालीन

वह राधा रानी अमर

शफ़ीक़ फ़ातिमा शेरी

चली आती है चंदा साथ लिए
जब बसंत रुत आए
फूल उसको घेरे
साध स्वभाव रचाव भरे
इक प्यारी शान से लहराते
जब बसंत रुत आए
वह राधा रानी अमर
चली आती है झोंके साथ लिए
कुसुमों के दोनों रूप
पर्श-परमेशर
घुले मिले इस अछूते जीवन में
वह राधा रानी अमर
चली आती है झरने साथ लिए
जब बसंत रुत आए
मधु मालती बादल बादल छाई हुई
चमकीले तारे चमेली के
चंदा से कमल
जब बसंत रुत आए
वह राधा रानी अमर
चली आती है जगती आत्मा साथ लिए

मेरा वतन यही है

साजिदा ज़ैदी

1929-2011

ये दिल की राहें उदास क्यूँ हैं उम्मीद के क़ाफ़िले कहाँ हैं
अम अपने कूचों में अजनबी हैं हम अपने ही घर में मेहमाँ हैं

यही वतन है यही है मरकज़ हमारे हर ख़्वाब-ए-आरज़ू का!
यही वतन है यही है मसकन, वफ़ा-ओ-उम्मीद-ओ-जस्तुजू का!
यही वतन है इसी के कूचों ने ख़्वाब-ए-नौ[1] देखने सिखाए!
इसी के ज़र्रों की चाहतों ने
हमारे बचपन की नर्मो-नौख़ेज़[2] ख़्वाहिशों को
जवाँ अज़ाइम[3] की आँच बख़्शी!
इसी के सीने की धड़कनों ने
हमारे दिल के अमीक़ गोशों को रौशनी की नई किरण दी!
हम इसकी गोदी की राहतों को
यहाँ से ठुकरा के कैसे जाते?
हम इसकी ममता का सोज़[4] खोकर
सुकून-ओ-आराम कैसे पाते?

---

[1] नए ख़्वाब
[2] नौख़ेज़=नया नया
[3] इरादे
[4] दुख, दर्द

उस अजनबी देस की फ़ज़ाओं में दिल का आहंग कैसे मिलता?
उन अजनबी वादियों के दामन में चाह के फूल कैसे खिलते?
ये वारदातें ये नक़्शे-उल्फ़त अगर कहीं है तो बस यहाँ हैं!

असाढ़ के हल्के-हल्के बादल
झड़ी वह भादों की दोपहर की
वो कोएलों के गुदाज़ नग़्मों में रस बदलती हुई रुतों का
वो नीलगूँ[1] सुब्ह की फ़ज़ाएँ
वो दिल-नशीं शाम के धुँदलके[2]
हमारे आमों के बाग़, बाँसों के झुण्ड, दरियाओं के किनारे
हमारे सरसों के खेत, पीपल की छाँव ज़र्रात के इशारे
हमारा दामन पकड़ रहे थे
यक़ीं से झोली को भर रहे थे
वो पूछते थे तुम्हारे घर इन मुसर्रतों[3] के सिवा कहाँ हैं?
हमारे गीतों की मस्त तानें
हमारे मेलों की रंग-रलियाँ
हमारे तेहवारों की अदाएँ
हमारे फ़नकारों की सदाएँ
हमारे रस्तों में आ गई थीं
"वो कह रही थी यहाँ के ज़र्रे भी इस तमद्दुन[4] के पास्बाँ[5] हैं"

वो तंग गलियों में ज़िंदगी की हक़ीक़तें, पा-बरहना[6] बच्चे
वो अपनी मासूम अंखड़ियों[1] में हयात की तल्ख़ियाँ छुपाए

---

[1] नीले रंग का, आसमानी
[2] सूर्यास्त के बाद का समय
[3] ख़ुशियों
[4] किसी देश की वेश-भूषा, उनके रहन-सहने का ढंग और उनके आचार-व्यवहार
[5] चौकीदार, निरीक्षक
[6] नंगे पांव

ख़िराज-ए-इंसाफ़ माँगते थे!
वो अपनी मीरास[2] माँगते थे!
हज़ार तारीकियों के दामन में पलती यह ज़िंदगी की कलियाँ
पुकारती थीं किसी सहर-आफ़रीं[3] मज़ाक़े-अमल की तालिब
ये तंगो-तारीक[4] बस्तियाँ हैं ये सब अधूरी कहानियाँ हैं

हमीं ने जमुना के साहिलों को हसीं इमारात से सजाया
हमीं ने पत्थर के सख़्त सीने को नर्म एलोरा की धड़कनें दीं
हमीं ने रंगीनियाँ निचोड़ीं तो नक़्श अजंता के बन गए थे
जो हुस्नो-जोशे-अमल समोया तो लाल-क़िले सँवर गए थे
हमीं ने मर-मर की सर्व-ओ-सल को
अमर किया ताज की तड़प दी
यहीं की मिट्टी ने फ़िक्रे-ग़ालिब को अज़्मे-इक़बाल को निखारा
दिलों को टैगोर की नवाओं ने बख़्शा विजदान[5] का शरारा[6]
हमीं ने 'काली' की शायरी में
समोया शीराज़[7] और ईराँ का लहजा-ए-जज़्बो-कैफ़ो-मस्ती
हमीं ने इस सर-ज़मीने-गौतम को शेर का बाँकपन दिया था!
हमीं ने तहज़ीब-ए-हिंद को ये मिज़ाजे-गंगो-जमन दिया था!
यहाँ के अफ़कारो-इल्मो-आईं हमारी अज़मत के राज़दाँ हैं

नहीं है अपने वतन की मिट्टी तो कौन अपना निगाह-बाँ है?
नहीं हैं गर ये हसीं फ़ज़ाएँ तो कौन अपना मिज़ाज-दाँ है?

---

[1] सुंदर आँखें (प्रायः प्रेम से)
[2] विरासत, पुश्तैनी धरोहर, जागीर
[3] जादू पैदा करने वाला, चमत्कार दिखाने वाला
[4] सँकरी और अँधेरी
[5] अंतर्ज्ञान
[6] चिंगारी, प्रकाश
[7] ईरान का एक मशहूर और प्राचीन नगर जहाँ बहुत बड़े-बड़े कवि हुए हैं, हाफ़िज़ और सा'दी वहाँ के सर्वोत्तम कवि हैं.

नहीं है गर ये हमारी मंज़िल तो फिर बताओ तुम्हें कहाँ है?
ये किस के सफ़्फ़ाक हाथ ने तोड़ डाला इस घर का साज़-ए-उत्फ़त?
ये किसने मज़हब का नाम लेकर मिटा दी मेराज-ए-आदमिय्यत?
कहाँ हैं जोश-ओ-वफ़ा-ओ-हिम्मत?
कहाँ है अजदाद की हमिय्यत?
हैं क्यूँ लुटेरों में माएँ-बहनें?
ये कौन इस घर के पास्बाँ हैं?
कहाँ हो चारागर बताओ कहाँ उख़ुव्वत के कारवाँ हैं?
कहाँ हो ऐ रहबरो दिखाओ बुझे-बुझे राह के निशाँ हैं?
हम अपने कूचों में अजनबी हैं हम अपने ही घर में मेहमाँ हैं?

नज़्रे-इंदिरा[1]

राबिया बरनी

1924-

(हिंदुस्तान के महान पृष्टभूमि, इसकी विचारशील और रंगारंग कलाकृतियों का सहारा लेकर इस नज़्म की रचना की गई है और फिर उस गहरे संबंध का इज़्हार है जो अतीत, वर्तमान और भविष्य के रिश्तों से इंदिरा जी की अंतर्दृष्टि को मिलाता है। इस नज़्म में उनके महान और बहुमुखी व्यक्तित्व को नमन करने का एक प्रयास किया गया है।)

ये चमन ये हुस्ने-फ़ितरत[2] की अनोखी दास्ताँ
ये पहाड़ों, सागरों, सेहराओं, मैदानों की दिलकश सरज़मीं
देवताओं की, ख़ुदा की, बुद्ध की, ईसा की, नानक की ज़मीं
अनगिनत इंसान, तहज़ीबें, मज़ाहिब, दास्तानें, बोलियाँ
जिसमें हर-हर दौर में नौ-ए-बशर[3] ने
नित नए अंदाज़ से अपनी सजाई बस्तियाँ
धान की शादाब[4] गहरी सब्ज़ियाँ
हल्की-हल्की धूप में कुंदन की सूरत जगमगाती वादियाँ
लम्हा-लम्हा ज़िंदगी का हर अमल आगे रवाँ पैहम-दवाँ
क्या नहीं है इस जहाने-बेश-ओ-कम में क्या नहीं

---

[1] इंदिरा गांधी की भेंट
[2] प्रकृति की सुंदरता
[3] मानव जाति
[4] हरा-भरा

रंज मेहनत आशना, ख़ुशियाँ इबादत आफ़रीं
आज क्यूँ रंगे-चमन धुँदला गया
माहे-ताबाँ बादलों में जा छुपा
पाँव क्यूँ बादे-बहारी[1] के क़लम होने लगे
ग़ुंचा-ओ-गुल[2] की जगह काँटे बहम[3] होने लगे
हाए क्या उफ़्ताद[4] सेहने-बोस्ताँ[5] पर आ पड़ी
कौन वह ज़ालिम नज़र थी बाग़बाँ को खा गई

वह ‘अशिश’ की पाक देवी
सुब्ह के माथे पर शबनम की लड़ी
ज़िंदगी की इब्तिदा का इज़्ने-आम[6]
आसमानों के दरीचे खोलती
मेहनत-ओ-उल्फ़त पे उकसाती
बहारों के सुनहरे राग गाती
नूर की पोशाक पहने, नूर की रथ पर सवार
मेहरबान-ओ-कामराँ[7]
वेद के सफ़्हों से जैसे उठ के मुस्काने लगी
या कि ‘इंद्र’ देवता का एक नया स्वरूप है
कुर्रा-ए-ख़ाकी[8] को जिसने इस्तिक़ामत[9] बख़्श दी
गुंबदे-अफ़लाक[10] को क़ायम किया

---

[1] बसंत ऋतु की सुगंधित और शीतल वायु
[2] फ़ूल और कली
[3] साथ
[4] आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत
[5] उद्यान, बाग़ का आँगन
[6] आम निमंत्रण
[7] कामयाब
[8] धरती
[9] दृढ़ता, मज़बूती
[10] आकाश का गुम्बद

और फिर अर्ज़ो-समा[1] उसके क़दम छूने लगे
'सोम' अमृत पी के जिसने आदमीयत को किया आफ़ाक़गीर[2]

ख़ुश्क बंजर हो गए थे कोहसारो-मर्ग़ज़ार[3]
बिजलियाँ तड़पीं, ज़मीं तप-तप गई
हर तरफ़ बादल गरजते गूँजते बढ़ने लगे
तब कहा 'इंद्र' ने बारिश से कि 'अब आज़ाद हो'
और 'निखरा दे ज़मीं-ओ-आस्माँ'
बहर-ओ-बर[4] झूमे, हवाएँ गुल-बदामाँ[5] हो गईं
आ गई नज़रों के आगे मंज़िले जहदो-अमल

वो निगारे-किश्वरे-हिंदोस्ताँ
मायादारे[6]-महफ़िले दानिशवराँ[7]
माज़ी-ओ-हाल[8] और मुस्तक़बिल की वो शीराज़ाबंद[9]
अस्रे-हाज़िर[10] की उभरती ख़्वाहिशों, आसाईशों[11] की तर्जुमाँ
हर तक़ाज़े हर अमल की पेशरू[12]
जिसने समझे पासदारी के उसूल
साथदारी जाँ-निसारी के उसूल

---

[1] पृथ्वी और आकाश
[2] विश्व विजयी, संसार पर छा जाने वाला
[3] पर्वत और चारागाह
[4] ज़मीन और समुन्द्र, अर्थात: सारा संसार, पूरी दुनिया
[5] अपने साथ फूल की ख़ुशबू लिए
[6] धनी, मालदार
[7] विद्वान
[8] अतीत और वर्तमान
[9] श्रृंखलाबद्ध
[10] आधुनिक काल
[11] सुख, चैन, आराम
[12] आगे चलने वाली

इम्तियाज़े-मर्दो-ज़न[1] इक हर्फ़ बातिल[2] हो गया
आलम-ए-इंसानियत[3] को हमदम कामिल मिल गया

वह शऊरे-ईं-ओ-आँ[4]
जितने मुस्तक़बिल के कितने रास्ते तय कर लिए
देखते ही देखते कितने ज़माने सर हुए
जिसने हर इमकान को अपने अहाते में किया
जिसने छू ली गर्मी-ए-अंदेशा से नब्ज़े-जहाँ

इक अमानत है लहू का एक इक क़तरा तेरा
एक इक ज़र्रा हमारी रूह का मक़रूज़[5] है
तेरे ख़्वाबों तेरे आदर्शों को पूरा कर दिखाना है हमें
जान-ओ-दिल पर खेल कर क़र्ज़े चुकाना है हमें
दौरे-गरदूँ[6] टूटते तारों का मंज़र-साज़ है
आज सीमाए ज़मीं से इक सितारा आसमाँ परवाज़ है
ये सितारा दास्ताने-हिंद की तक़दीर का एजाज़ है
नाज़ है ख़ातूने-मशरिक़ हमको तुझ पे नाज़ है

---

[1] पुरुष और स्त्री का अंतर
[2] झूठा
[3] संसार के लिए
[4] ये और वो की समझ, लोक और परलोक की समझ
[5] क़र्ज़दार
[6] गरदूँ=आसमान

क़ौमी यकजहती

सैयदा फ़रहत

1938-2003

ज़हने-इंसाँ के मुक़फ़्फ़ल[1] ये दरीचे[2] खोलो
हब्स[3] बेहद है ज़रा ताज़ा हवा आने दो

रौशनी क्यूँ नहीं होती ये अँधेरा क्यूँ है?
ज़ुल्मते-शब[4] का ये हम-रंग[5] सवेरा क्यूँ है?

क्यूँ दिमाग़ों पे हैं वहमों अन्धेरे छाए?
चाक[6] हो जाएँ जो पर्दे तो उजाला आए

ग़ैरत ने जो उठा रखी है ऊँची दीवार
रौशनी से हमें होने नहीं देगी दो चार

---

[1] जिसमें ताला लगा हुआ हो
[2] खिड़की, झरोखा
[3] घुटन
[4] रात का अंधेरा, प्रतिकूल परिस्थितियाँ
[5] एक ही रंग का, एक-जैसे आचार-विचार वाले
[6] फटना

ले के तेशा[1] उठो एक आन में ढ़ा दो इसको
रौशनी रोके हुए है ये गिरा दो इसको

बात अब शेख़ो-बरहमन[2] की न चलने देना
फ़िर्क़ा-साज़ों[3] को न अब ज़हर उगलने देना

फूट जो तोहफ़ा-ए-अग़यार[4] है क्यूँ पास रहे
क्यूँ न अब क़ौम को यकजहती का एहसास रहे

काम लो दीदा-ए-बीना को ये वहशत[5] छोड़ो
अक़्ल के ज़ोर से ज़ंज़ीर-ए-तौहम[6] तोड़ो

भूत हम जिसको समझते हैं वो साया तो नहीं
अपने ही अक्स[7] ने क्या हमको डराया तो नहीं

बैठ कर शीश-महल में न हिफ़ाज़त होगी
कोई तूफ़ाँ जो उठेगा तो क़्यामत होगी

---

[1] कुल्हाड़ी, बेलचा, पत्थर काटने का औज़ार
[2] मुसलमान और हिंदू
[3] साम्प्रदायिकता रखने वाला
[4] अग़यार=दुश्मन
[5] भय, डर
[6] तौहम=भ्रम में डालना
[7] परछाईं

ख़लवते-ख़ास[1] से अब बरसरे-आम[2] आ जाओ
मिल के रहना है हमें आज तो काम आ जाओ

रूहे-वहदत को है कसरत[3] में नुमायाँ करना
जज़्बए-इश्क़ दिलों में है फ़रावाँ[4] करना

क़तरा दरिया से अलग होके फ़ना होता है
फूल का शाख़ ही पे नशो-नुमा[5] होता है

फूल सब रंग-बिरंगे हैं चमन की ज़ीनत[6]
इन सभी अहले-वतन[7] से है वतन की ज़ीनत

कोई मज़हब हो ज़बाँ कोई हो कोई हो मक़ाम
जज़्बा-ए-हुब्बे-वतन[8] दिल में हो हर शख़्स के आम

मुत्तहिद होके अगर होगी न तामीर-ए-वतन[9]
आज बदली है न कल बदलेगी तक़दीर-ए-वतन

---

[1] विशेष निजी बैठक
[2] सबके सामने
[3] अनेकता
[4] बहुत अधिक, प्रचुर
[5] विकसित होना, फूलना-फलना
[6] शोभा
[7] देशवासी
[8] देशप्रेम का जज़्बा
[9] राष्ट्र-निर्माण

बच्चों की मुस्कान

सैयदा फ़रहत

कैसी सुहानी कैसी रसीली बच्चों की मुस्कान
हँसते और मुस्काते बच्चे भारत देस की शान

कल ये महकते फूल बनेंगे आज हैं नन्ही कलियाँ
साया इन पर किए हुए हैं आशाओं की परियाँ
ज़हरीले काँटों से न उलझे ये नन्ही सी जान

कैसी सुहानी कैसी रसीली बच्चों की मुस्कान
हँसते और मुस्काते बच्चे भारत देश की शान

नन्ही मुन्नी कोमल कलियाँ कहीं न मुरझा जाएँ
ख़ुशबू महके क्यारी-क्यारी महकें और महकाएँ
गुलशन के सब रखवालों पर फ़र्ज़ है इनका ध्यान

कैसी सुहानी कैसी रसीली बच्चों की मुस्कान
हँसते और मुस्काते बच्चे भारत देश की शान

जीवन में उजियाला इनसे, ये धरती के तारे
गोरे हैं या काले हैं ये बच्चे प्यारे प्यारे
माओं की ममता से पूछो सब हैं चाँद समान

कैसी सुहानी कैसी रसीली बच्चों की मुस्कान
हँसते और मुस्काते बच्चे भारत देश की शान

बस्ती-बस्ती नगर-नगर ये अमृत जल बरसाओ
जीवन जोत जलाओ हर-सू[1] इल्म का दीप जलाओ
जब हों बड़े ये आज के बच्चे निकलें सब विद्वान

कैसी सुहानी कैसी रसीली बच्चों की मुस्कान
हँसते और मुस्काते बच्चे भारत देश की शान

सेहत की सुंदरता पाएँ सबको रंगो-रूप मिले
ताज़ा हवा भरपूर ग़िज़ा[2] हो इनको सुनहरी धूप मिले
फूले फले परवान चढ़े ये भारत की सन्तान

कैसी सुहानी कैसी रसीली बच्चों की मुस्कान
हँसते और मुस्काते बच्चे भारत देश की शान

अम्न की छाँव में खेलें इनको सबका प्यार मिले
दुख न इन्हें पहुँचाए कोई इनको सुखी संसार मिले
देस की सारी माएँ दिल में रखती हैं अरमान

कैसी सुहानी कैसी रसीली बच्चों की मुस्कान
हँसते और मुस्काते बच्चे भारत देश की शान

---

[1] हर तरफ़

[2] भोजन, पौष्टिक आहार

मैं हूँ तेरी रुकमणी

रफ़िया शबनम आबिदी

1943-

काठा

तेरे नाम का सिंदूर

अपनी माँग में भर कर ख़ुश हूँ

अपने घर में सेज सजाए

पल-पल तेरा रस्ता देखूँ

तेरे नाम की माला जप-जप

आँगन की तुलसी को पूजूँ

तेरे ही गुनगान करूँ मैं

लेकिन फिर भी

ना मैं तेरी राधा कान्हा!

ना मैं तेरी मीरा

कौन भला तेरे नाम से पहले

मेरा नाम पुकारे?

बंसी बजैया!

तेरी रुकमणी पग-पग तुझको हारे

तेरे प्रेम में डूबी साँझ सकारे

दूर से तुझको निहारे

फिर भी मेरे रास रचैया!

तू मेरा ही साजन, कान्हा! तू मेरा ही साजन!

मैं हूँ तेरी रुकमणी

तेरे सात जनम की बंदनी!!

गणेश जी के नाम

रफ़िया शबनम आबिदी

ये शायरा जो तुम्हारी धरती पे जी रही है
गणेश जी तुम से पूछती है
तुम्ही हो वो जाँ-निसार बेटे?
कि जिसने माँ की मुहाफ़िज़त[1] में
गला भी अपना कटा दिया था?
अदा हो ममता का क़र्ज़ कैसे
ये राज़ सबको बता दिया था?
ये शायरा जो तुम्हारी धरती पे जी रही है
गणेश जी तुम से पूछती है

गणेश जी! वह तुम्हारी माँ थी?
कि जिसको धरती के बासियों ने भी माँ पुकारा?
सुना यही है वह गुणवती थी
वह पाक-दामन[2] थी और सती थी
पति को परमेश्वर समझ कर
बड़ी श्रद्धा से पूजती थी?

---

[1] रक्षा
[2] जिसका चरित्र पवित्र और निष्कलंक हो

गणेश जी! ये भी एक सच है
हमारी माएँ तुम्हारी माँ की तरह ही शौहर-परस्त[1] ठहरीं
हमारी माएँ भी पाक दामन
हमारी माओं के दिल भी रोशन
तो किसने फिर इनके आँचलों पर
उजड़ती कोख और ख़ाली गोदी का जानलेवा
अज़ाब तहरीर[2] कर दिया है?
दमकते माथों पे बेवगी[3] का निशान तस्वीर कर दिया है?

ये शायरा जो तुम्हारी धरती पे जी रही है
गणेश जी तुम से पूछती है

गणेश जी! वह तुम्हारे बाबा
जिन्होंने धरती का ज़हर सारा
ख़ुद अपने हलक़ों[4] में उतारा
कि इसके बाद अब
जहान में कोई तल्ख़ी न रहने पाए
कोई किसी को न डसने पाए
तो फिर हमारी स्वर्ग धरती पे साँप कैस मचल रहे हैं?
ये ज़हर कैसा उगल रहे हैं?

---

[1] पतिव्रता, पति(परायणा
[2] लिखना, लिखाई
[3] विधवापन
[4] गला, कंठ

ये शायरा जो तुम्हारी धरती पे जी रही है
गणेश जी तुम से पूछती है

गणेश जी! तुम तो गणपति हो
तुम्ही तो हो ना? कि जिसने धरती के विघ्न[1] सारे
शिकम[2] में अपने समो[3] लिए थे
कि अब कहीं भी कोई ग़िलाज़त[4] न रहने पाए
कोई भी आफ़त न रहने पाए
तो इन महकती हवाओं में इस क़दर तअफ़्फ़ुन[5] कहाँ से आया?
गुलाब ज़हनों में ये तलव्वुन[6] कहाँ से आया?

ये शायरा जो तुम्हारी धरती पे जी रही है
गणेश जी तुम से पूछती है

गणेश जी! तुमसे है ये विनती
लहू के ब्योपारियों से कह दो
कि माँ की ममता से क़ीमती कोई शय[7] नहीं है
उन्हें बता दो
जवान बहनों के जिस्म मंदिर समान ठहरे
जिन्होंने आदर किया, वही तो मेहमान ठहरे
उन्हें बता दो

---

[1] बाधा, रुकावट, मुसीबत
[2] पेट
[3] समेट लेना, खपाना
[4] गंदगी
[5] सड़ाँध, दुर्गंध
[6] अस्थिरता
[7] वस्तु

कि नन्हे बच्चे खिले गुलाबों से कम नहीं हैं
ये तीर, त्रिशूल, बम नहीं हैं

गणेश जी! तुम दया के सागर
ये ताज और तख़्त के गदागर
इन्हें भी थोड़ा मोहब्बतों का चलने सिखा दो
इन्हें भी हुब्बे-वतन सिखा दो!
ये शायरा जो तुम्हारी धरती पे जी रही है
गणेश जी तुम से पूछती है

गोमती

शमा ज़फ़र मेहदी

1943-

मेरे बचपन की मेरी प्यारी सहेली गोमती
तुझ पे क्या गुज़री है कि तू यूँ सिमट कर रह गई

वो तेरी मद्धम सुरों में ख़ुश-बयानी[1] क्या हुई?
वो तेरी बेसाख़्ता[2] तर्ज़े-रवानी क्या हुई?

शोख़ी-ए-रफ़्तार[3] पर तेरी फ़िदा था लखनऊ
हर क़दम पर कह रहा नामे-ख़ुदा था लखनऊ

कब भला अपनी हदों में इस तरह बहती थी तू
बेख़ुदी[4] में सब किनारे तोड़ती रहती थी तू

[1] बोलचाल और बातचीत की मिठास
[2] प्राकृतिक रूप से, अनायास
[3] चंचल रफ़्तार
[4] मस्ती

लखनऊ वाले तेरे अंदाज़ के दीवाने थे
शमा के मानिंद थी तू सब तेरे परवाने थे

तेरे अल्हड़-पन की वो बे-साख़्ता मस्ताना चाल
जैसे आ जाए क़लंदर को किसी महफ़िल में हाल

जब कभी लहरें शरारत पर तेरी आ जाती थीं
दरमियाने-शहर[1] भी तब कश्तियाँ चल जाती थीं

शहर से बाहर थी तेरी तेज़ रफ़्तारी फ़ुज़ूँ
घूमती और मोड़ती रहती थी अपनी चाल तू

नीमा-शाबान [2] की रातों में आराइश [3] तेरी
तैरते बजरों से रोशन हुस्नो-ज़ेबाइश [4] तेरी

रौशनी से माँग में अफ़्शाँ [5] भरे रहना तेरा
दोनों जानिब ज़ुल्फ़ का साया किए बहना तेरा

---

[1] शहर के बीच

[2] 15 शाबान (शब-ए-बरात)

[3] सजावट

[4] सुंदरता

[5] स्त्रियों के बालों अथवा गालों पर छिड़कने का सुनहला या रुपहला चूर्ण,

हुस्न का तेरे उजाला था अवध की शाम में
दिलकशी तेरी थी सारी लखनऊ के नाम में

शहर की सारी कसाफ़त[1] यूँ छुपा लेती थी तू
ज़ख़्मे-दिल पर रेशमी आँचल उढ़ा देती थी तू

ओढ़नी आबे-रवाँ[2] की फेंकती रहती थी तू
रक़्स करती गिरती पड़ती भागती चलती थी तू

तेरे फ़ितरी रक़्स को ज़ंजीरे-पा[3] किसने किया
हुस्ने-बेपरवा[4] को पाबंदे-हया किसने किया

क्यूँ ज़माने के सितम इस तरह तू सहने लगी
आँसुओं की नहर के साथ क्यू बहने लगी

---

[1] प्रदूषण, अशुद्धता
[2] बहता हुआ पानी
[3] पाँव की ज़ंजीर, रुकावट
[4] careless beauty

अभिशाप

कहकशाँ तबस्सुम

1960-

हज़ारों साल बीते
मेरी ज़रख़ेज़[1] धरती के सिंघासन पर
बिराजे देवताओं के सरापे साँवले थे
मगर उस वक़्त भी कुछ हुस्न का मेयार[2] ऊँचा था
हिमाला की हसीं बेटी उन्हें भाई
बृन्दाबन की धरती पर
थिरकती नाचती राधा
बसी थी कृष्ण के दिल में
उन्हें भी हुस्न की मनमोहनी मूरत पसंद आई
मगर उनको ख़ुदा होते हुए भी ये ख़बर कब थी
कि उनकी आने वाली नस्ल पर उनका सरापा
बहुत गहरा असर है छोड़ने वाला
हज़ारों साल बीते
मगर अब भी हमारी साँवली रंगत
तेरा वरदान हो गया
हमारा हमसफ़र भी किसी पारो
किसी राधा का अंधा ख़्वाब

---

[1] उपजाऊ

[2] सिद्धान्त

आँखों में बसाए
लिए कश्कोल हाथों में
फिरे बस्ती की गलियों में
हम अब किस ज़ोम[1] में पूजा की थाली में
दीये रख कर
तेरी चौखट पे आएँ
सर झुकाएँ
उतारें आरती तेरी
हमारे बख़्त पर तेरा ये श्यामल रंग
इक आसेब[2] की सूरत मुसल्लत[3] है
हम अब तो डर के मारे
आइनों से मुँह छुपाए फिर रहे हैं

---

[1] अहंकार
[2] कोई बड़ा अनिष्ट, ख़तरा
[3] विवश किया हुआ, थोपा हुआ

ये नफ़रतें क्यूँ?

मलका नसीम

1954-

ये नफ़रतों की बिना[1] जाने किसने डाली है

मोहब्बतों से भरा है वतन का हर ज़र्रा

हवा चले तो हर इक घर को

ज़िंदगी दे दे

घटा जो बरसे तो बंजर ज़मीन हरी कर दे

बहार आए तो देखे न शाह और न फ़क़ीर

गुलों के रंग से धरती की

गोदियाँ भर दे

ये नफ़रतों का चलन फिर कहाँ से आया है?

कभी घटाओं ने ये भेदभाव रक्खा है?

हवाओं ने कभी दैर-ओ-हरम[2] को परखा है?

सहर[3] की धूप न सोचे कहाँ निकलना है

---

[1] जड़, कारण, सबब

[2] मंदिर और मस्जिद

[3] सुबह

न छाँव देखे किसी राहगीर का मंसब[1]
तो फिर ये ज़हर की बूँदें कहाँ से आई हैं?
किसी के साथ ज़रा दूर चल के देखो तो
किसी के हाथ को हाथों में लेके देखो तो
किसी के दर्द को पल्कों से चुन के देखो तो
हटा दो आँखों से पर्दे ये नफ़रतों के अगर
सब एक सा लगे काबा हो या कलीसा[2] हो
न कोई राम का मंदिर न बाबरी मस्जिद
न गुरुद्वारे के दर पर किसी का पहरा हो
दिलों को झुकने-झुकाने का फ़न अगर आ जाए
जहाँ से तफ़रिक़ा-बाज़ी[3] का हर चलन मिट जाए
अशोक-ओ-अकबर-ओ-गौतम ने फ़र्क़ कब रक्खा
चले थे जौहर-ओ-गाँधी भी एक साथ सदा
लिए जवाहर-ओ-इक़बाल प्रेम की सौग़ात
ये सच है
नानक-ओ-चिश्ती का ख़्वाब एक ही था
तो उनके ख़्वाबों की ताबीर[4] क्यूँ न सच कर दें
मोहब्बतों से ज़माने में रौशनी भर दें

---

[1] पद, ओहदा

[2] चर्च

[3] मतभेद, असहमति जो कलह की ओर ले जाती है, संबंधों में अशांति पैदा करने का कार्य करती है.

[4] स्वप्नफल बताना

हम हैं हिंद के शैदाई[1]

मसऊदा हयात

इस देस की वादी में हर फूल महकता है
हर क़ौम के रहबर[2] का किरदार लहकता है
अपना हो कि बेगाना बुलबुल से चहकता है
हर मज़हब-ओ-मिल्लत ने भारत में अमाँ[3] पाई
हम हिंद के रखवाले हम हिंद के शैदाई

इक अम्नो-मोहब्बत की तफ़सीर[4] है यह गुलशन
ईसारो-उख़ुव्वत[5] की तस्वीर है यह गुलशन
तामीरो-तरक़्क़ी की तनवीर[6] है ये गुलशन
हर गोशा-ए-भारत है ख़ुद अपना तमाशाई
हम हिंद के रखवाले हम हिंद के शैदाई

हर फ़र्द को जीने का अंदाज़ सिखा देंगे
क्या शय है रवादारी दुनिया का दिखा देंगे
हर नस्ल के इंसाँ को हम एक बना देंगे
सूरज की किरण अब तो बादल से निकल आई
हम हिंद के रखवाले हम हिंद के शैदाई

---

1 दीवानगी
2 मार्गदर्शक
3 पनाह
4 व्याख्या
5 बलिदान और भाईचारा
6 रौशनी

राखी

मसऊदा हयात

इसके धागों में दिल के ख़ज़ाने निहाँ[1]
इसके फूलों में दरिया-ए-उल्फ़त[2] रवाँ
ये बहन-भाई की चाहतों का निशाँ
ये है राखी का बंधन मेरे भाईयो!
इसकी तस्वीर में है अजब बाँकपन
इसकी तारीख़ में एकता का चलन
इसकी अज़मत[3] का क़ायल है सारा चमन
ये है राखी का बंधन मेरे भाईयो!
सिर्फ़ बंधन नहीं एक पैमान है
भाईयों के दिलों का ये ईमान है
अपनी बहनों पे हर भाई क़ुर्बान है
ये है राखी का बंधन मेरे भाईयो!
की हुमायूँ ने रक्षा जो मेवाड़ की
दुश्मनों को हर इक मोड़ पर मात दी
रक्षाबंधन ही की ये करामात थी
ये है राखी का बंधन मेरे भाईयो!

---

[1] गुप्त, छिपा हुआ
[2] मोहब्बत का दरिया
[3] प्रतिष्ठा, वैभव

रंग-बिरंगे मौसम यादों के

अज़रा नक़वी

1952-

कितने रंग-बिरंगे मौसम यादों के
दिल में बीते बरसों की हरियाली है

छुप कर बैठी अंदर वाले कमरे में
गर्म दुपहरी ख़स[1] की ख़ुशबू वाली है
अम्मी ऊँघ रही हैं हाथ में पंखा है
बूआ से मेंहदी पाँव में लगवा ली है
ख़ाला ने रेशम से साड़ी पर
काढ़ी नाज़ुक फूलों की इक डाली है
भैया की शादी की बातें होती हैं
लड़की भी तो घर की देखी-भाली है
रोबदार सावन ताव ओदे[2] नीले
सावन भाभी सब्ज़ दुपट्टे वाली है
धान के खेतों में सारस की जोड़ी है
कहते हैं कि उनका प्यार मिसाली है
बाजी ने आँगन में झूला डाला है
बच्चों ने काग़ज़ की नाव बना ली है

[1] सूखी घास, एक ख़ुशबूदार जड़
[2] नम,गीला

सुब्ह को कोहरे ने सरसों की खेतों में
आबी-रंगों [1] की तस्वीर सजा ली है
धूप में दादा कुर्सी डाले बैठे हैं
हाथों में अदरक की चाय की प्याली है
बच्चों का डेरा दादी के बिस्तर में
कोई कहानी नई सुनाने वाली है

कितन रंग-बिरंगे मौसम यादों के
दिल में बीते बरसों की हरियाली है

[1] हल्का नीला रंग

मेरे ख़्वाब मुझे लौटा दो

जश्ने-आज़ादी मुबारक हो तुझे अर्ज़-ए-वतन
जश्ने-आज़ादी तुझे मेरा सलाम
याद हैं मुझको अभी
अपने बचपन की वो रौशन सुब्हें
जश्ने-आज़ादी के शादाँ[1] मंज़र
सारे वो हुब्बे-वतन[2] के नग़मे
जिनके आहंग पे आँखों में दीये जलते थे
जिनके हर लफ़्ज़ पे ईक़ान[3] हुआ करता था
ईमान हुआ करता था
जश्ने-आज़ादी मैं क़ुर्बान तेरी अज़मत के
और कुछ तुझसे नहीं माँगती मैं
बस मेरे ख़्वाब मुझे लौटा दे
वो उम्मीदों की विरासत मेरे ताबिन्दा[4] ख़्वाब
वो कहीं
बे-यक़ीनी की घनी धुंद में खोए हुए हैं
जो कभी मेरे बुज़ुर्गों ने मुझे सौंपे थे

---

[1] आनंदित
[2] देशप्रेम
[3] विश्वास
[4] रौशन, उज्ज्वल

अम्ने-आलम[1] के, मोहब्बत के, रवादारी[2] के ख़्वाब
आम इंसान की अज़मत के, वफ़ादारी के ख़्वाब
इक नए दौर की तैयारी के ख़्वाब
ऐ मेरी अर्ज़े-वतन
मेरे पुरखों की विरासत वही रख़्शंदा[3] ख़्वाब
ताकि मैं अपनी नई नस्ल को भी
उनकी अमानत सौंपूँ
उनकी आँखों में सजा दूँ
वह ख़ुश-आइंदा[4] ख़्वाब

---

[1] विश्व शांति
[2] सहिष्णुता, सब धर्मों का सम्मान करना, पक्षपात रहित
[3] ज्वलंत, रौशन
[4] आकर्षक

ख़ुशबू-ए-वतन

नुसरत मेहदी

1970-

हर तरफ़ महकी हुई मेरे चमन की ख़ुशबू
है फ़ज़ाओं में अज़ानों की भजन की ख़ुशबू
मुझको विर्से[1] में मिली गंगो-जमन[2] की ख़ुशबू
मेरी हर साँस में बस्ती है वतन की ख़ुशबू

छाई रहती है मेरे सर पे घटाओं की तरह
हाँ ये ख़ुशबू है मेरी माँ की दुआओं की तरह

दिल की दुनिया हुई गुलज़ार इसी ख़ुशबू से
शायरी है मेरी सरशार इसी ख़ुशबू से
है ये रानाई-ए-अफ़कार[3] इसी ख़ुशबू से
है मोअत्तर[4] मेरा किरदार इसी ख़ुशबू से

एक दिन मैं इसी ख़ुशबू ही में खो जाऊँगी
ओढ़ कर ख़ाके-वतन[5] ख़ाक में सो जाऊँगी

---

[1] धरोहर, विरासत
[2] गंगा-जमुना
[3] विचारों की सुंदरता
[4] सुगंधित
[5] देश की मिट्टी

ग़ज़ल

ऐ वतन तुझ पे सदक़े[1] मेरी जान है, मेरी सारी वफ़ाएँ तेरे साथ हैं
हो ज़माने में आला[2] तेरा मर्तबा[3], हर घड़ी ये दुआएँ तेरे साथ हैं

ऐ मेरी सर-ज़मीं, मेरे हिंदोस्ताँ, हो तेरी ख़ैर महके तेरा गुलसिताँ
दिल से निकली दुआओं पे आमीन की हर तरफ़ से सदाएँ तेरे साथ हैं

तेरी खोई हुई एक जागीर तक यानी कन्याकुमारी से कश्मीर तक
ख़्वाब देखेंगे इस बार तामीर तक, सब की सब आस्थाएँ तेरे साथ हैं

सरहदों पे थीं जिनकी निगहबानियाँ[4], याद करते हैं हम जिनकी क़ुर्बानियाँ
उन शहीदों की पुर-अज़्म[5] ब-हौसला हिम्मतों वाली माएँ तेरे साथ हैं

---

[1] क़ुर्बान
[2] ऊँचा
[3] दर्जा, पद
[4] निगरानी
[5] संकल्प से भरपूर

गुल्हाए अक़ीदत[1]

सैयदा शान मेराज

1948-

यौमे-आज़ादी ने यूँ छिड़का फ़ज़ाओं में गुलाम
गुलसिताँ से भीनी भीनी ख़ुशबूएँ आने लगीं
तितलियाँ अपने परों पर पाके क़ाबू हर तरफ़
सेहने-गुलशन[2] की रविश पर रक़्स[3] फ़रमाने लगीं

क़ुमरिया[4] मीठे सुरों के साज़ लेकर आ गईं
बुलबुलें मिलजुल के आज़ादी के गुन गाने लगीं
गुल से अपनी निस्बते-देरीना[5] की खाकर क़सम
अहले-दिल को इश्क़ के अंदाज़ समझाने लगीं

सब्हे-दम बादे-सबा[6] की शोख़ियाँ काम आ गईं
लाला-ओ-गुल को बग़लगीरी का मौक़ा मिल गया
देख कर इस दोस्ती के पुर-फ़ज़ा[7] माहौल को
सारी कलियाँ हंस पड़ीं सारा गुलसिताँ खिल गया

---

[1] श्रद्धा-सुमन
[2] फूलों के बगीचे का आंगन
[3] नृत्य
[4] एक प्रसिद्ध सफ़ेद पक्षी
[5] गहरा लगाव
[6] सवेरे की पुर्वा हवा
[7] खुला हुआ

लेकिन इस दिन के लिए हम-नशीनो दोस्तो!
कैसी कैसी बे-बहा [1] क़ुर्बानियाँ देना पड़ीं
ख़ूने दिल देना पड़ा ख़ूने जिगर देना पड़ा
अपने ख़्वाबों की हसीं परछाईयाँ देना पड़ीं

आरज़ू में तेरी ऐ गुलपोश शहज़ादी न पूछ
कैसे आलम-ताब सरदारों के सर जाते रहे
सरज़मीने-हिंद को दुल्हन बनाने के लिए
कैसे-कैसे दस्त-ओ-बाज़ू के शजर जाते रहे

ख़ैर अब हम मुतमइन[2] यूँ हैं कि जान-ए-आरज़ू
हमने कुछ खो भी दिया है और कुछ पाया भी है
कैसे-कैसे अक़्ल को देकर दिलासे जाने-जाँ
रूह को तस्कीन दी है दिल को समझाया भी है

अब यही कोशिश है दिल से ऐ मेरी अर्ज़े-वतन[3]
तेरी पेशानी पे अब कोई शिकन आने न पाए
तूने पहनी है जो आज़ादी की माला शौक़ से
उम्र भर कोई कली भी इसकी मुर्झाने न पाए

अपने गुल्हाए-अक़ीदत पेश करती हूँ तुझे
मुख़्तसर [4] ये है मोहब्बत पेश करती हूँ तुझे

---

[1] बेशक़ीमती

[2] संतुष्ट

[3] मातृभूमि

[4] संक्षिप्त

सुब्ह शबे-इंतिज़ार[1]

सैयदा शान मेराज

यही वह मंज़िले-मक़सूद[2] है कि जिसके लिए
बड़े ही अज़्म से अपने सफ़र पे निकले थे
इसी घड़ी की तमन्ना में जाने कितने लोग
जो बे-ख़ता थे मगर सूलियों पे लटके थे

ये सोचते थे कि वह दिन कभी तो आएगा
तमाम हसरतें दिल की निकल ही जाएँगी
हमारे पाँव की यह बेड़ियाँ यह ज़ंजीरें
कभी तो मोम की सूरत पिघल ही जाएँगी

कुछ इस तरह से बढ़ा दिल में ज़ौक़े-आज़ादी[3]
कि रफ़्ता रफ़्ता तमन्ना जवान होती गई
कुछ इस तरह से उठी हर तरफ़ से वह आँधी
जो उठते उठते ख़ुद इक आसमान होती गई

---

[1] वो सुबह जो रात में किसी के इंतिज़ार के बाद आई हो

[2] निश्चित गंतव्य

[3] आज़ादी का स्वाद

निगाह को थी मगर मीरे-कारवाँ[1] की तलाश
नज़र जो उट्ठी तो देखा कि एक मर्दे-फ़क़ीर
खड़ा है हौसला-ए-अम्नो-आश्ती लेकर
न कोई ख़ोद[2] बदन पर न हाथ में शमशीर

चिराग राह में इसके अमल से जलने लगे
लो आज सुब्ह शबे-इंतिज़ार आ ही गई
फ़ज़ा महकने लगी दिल-नवाज़[3] फूलों से
दयारे-हिंद[4] में फ़स्ले-बहार[5] आ ही गई

---

[1] क़ाफ़िले का सरदार
[2] कवच
[3] आकर्षक, पसंदीदा
[4] हिंदुस्तान
[5] वसंत ऋतु

हुस्न का पैकर ताजमहल

सीमा फ़रीदी

हुस्न का पैकर[1] ताजमहल
इश्क़ का मेहवर[2] ताजमहल

चाँद का हमसर[3] ताजमहल
पत्थर का घर ताजमहल

फूल का ज़ेवर ताजमहल
रूप का सागर ताजमहल

जाते दिन की रानाई
रात का झूमर ताजमहल

शाहजहाँ का सच्चा ख़्वाब
माह-ए-मुनव्वर ताजमहल

---

[1] प्रतिमा, मूरत, मूर्ति
[2] धुरी, केंद्र
[3] प्रतिद्वंद्वी

मसकन[1] है मुमताज़ का ये
दिलकशो-दिलबर ताजमहल

सारी दुनिया का महबूब
जाने-सुख़नवर ताजमहल

वक़्त मिला तो देखेंगे
हम तुम मिलकर ताजमहल

'सीमा' हम वारिस इसके
अपना मुक़द्दर ताजमहल

---

[1] निवास स्थान

क़ितआ

सीमा फ़रीदी

जश्ने जम्हूरियत के साथ ही अब
जश्ने इंसानियत मनाएँगे
फूल गुलशन में जैसे हँसते हैं
ऐसे ही हम भी मुस्कुराएँगे

गंगो-जमन की ख़ुशबू[1]

तबस्सुम आज़मी

1968-

सुब्ह-दम[2] आती है ऐ हिंद! तेरे आँचल से
हम्द की, नात की, पूजा की, भजन की ख़ुशबू

धड़कनों ने यहाँ छेड़ी है मोहब्बत की ग़ज़ल
है फ़ज़ाओं में उख़ुव्वत[3] के समन की ख़ुशबू

तेरे दामन में अजंता व हसीं ताजमहल
तेरे खेतों में है दहक़ाँ के जतन की ख़ुशबू

तेरे झरनों से उभरते हैं तराने दिलकश
रूह सरशार[4] करे दश्त-ओ-दमन[5] की ख़ुशबू

मीर-व-ग़ालिब हों कि इक़बाल या चकबस्त-व-फ़िराक़
तेरी मिट्टी में बसी इनके सुख़न[6] की ख़ुशबू

---

[1] गंगा और जमुना की ख़ुशबू
[2] सुबह-सवेरे
[3] भाईचारा
[4] मस्त
[5] पहाड़ और रेगिस्तान
[6] शायरी

रंग की, नस्ल की, तहज़ीब की है क़ौसे-क़ुज़ह[1]
है कहाँ दहर[2] में ये गंगो-जमन की ख़ुशबू

मुझको ग़ुर्बत[3] में भी एहसासे-वतन होता है
जब भी लाती है सबा मेरे वतन की ख़ुशबू

तेरी मिट्टी पे तसद्दुक़[4] हैं दिलो-जान सभी
भूल सकते नहीं हम तेरे मनन[5] की ख़ुशबू

तेरे होंटों पे 'तबस्सुम' की धनक खिलती रहे
सदा आबाद रहे तेरे चमन की ख़ूश्बू

---

[1] इन्द्र(धनुष
[2] संसार
[3] परदेस
[4] बलिदान
[5] सोच-विचार करना

बरसात

तबस्सुम आज़मी

छाई घंघोर घटा, महर बादल में छुपा
महकी महकी है फ़ज़ा, बहकी बहकी है हवा
दी पपीहे ने सदा, मोर भी झूम उठा
बर्क़ लहराने लगी, शाख़ बल खाने लगी
लगी बारिश की झड़ी, प्यास धरती की बुझी
पंख तितली के खुले, फूल उपवन में खिले
निखरा निखरा है चमन, ठण्डी ठण्डी यह पवन
बेलबूटों से सजी, भीगी भीगी यह डगर
मुस्कुराती है ज़मीं, ओढ़ के धानी चुनर
क्या सुहाना है समाँ, सारा जल-थल है यहाँ
बच्चे हाथों में लिए, नाव काग़ज़ की चले
कुछ बढ़े, फिसले, गिरे, क़हक़हे गूँज उठे
बैलों को नाधे हुए, हल को काँधे पे धरे
ख़ुशी से फूले किसान, पड़ गई आस में जान

रंग सावन का जमा, छाया पुरवा का नशा
पेड़ों पर झूले पड़े, पीत के गीत छिड़े
टोलियाँ गोरियों की, कजरियाँ गाने लगीं

आस्माँ पर है धनक[1], कच्ची मिट्टी की महक
रंगीं आँचल की झलक, चूड़ी पायल की खनक
शोख़ जज़्बों की लपक, मीटे सपनों की चमक
संग थोड़ी से कसक, भीगी-भीगी है पलक
नैनों में बीते हुए लम्हों के अक्स[2] सजे

याद पीहर की जगी, दिल में इक टीस उठी
कैसे पहुँचूँ मैं वहाँ, संग सखियों के जहाँ
ब्याह गुड़िया का रचा, बीता बचपन था मेरा
सेहनो-दालान[3], छतें, दरो-दीवारो-ज़मीं
रास्ता, कूचा, गली, झील, तालाब, नदी
खेत-खलियान सभी, जिनसे गुज़री थी कभी
ढूँढ़ते होंगे मुझे, कैसे भूलूँ मैं उन्हें
छलके-छलके से नैन, पी के आँगन में दुल्हन
आँख चौखट पे धरे, राह बाबुल की तके
अम्माँ जल्दी से ज़रा, भेजो बाबुल को मेरे
बीत जाए न कहीं, अब के सावन भी यहीं

---

[1] इंद्रधनुष
[2] परछाईं
[3] आँगन व बरामदा

नज़्र-ए-जयपुर[1]

नईमा जाफ़री पाशा

1954-

बहुत से साल हुए यह कभी मेरा घर था
जहाँ पे होश संभाला था यह वही दर था
यह सिर्फ़ शहर नहीं है मेरा वतन है यह
है जिसकी साँसों में ख़ुशबू वही चमन है यह
यहाँ ख़ुलूस[2] भी है ख़ल्क़[3] भी बसीरत[4] भी
दिलों में सादगी आँखों में है मुरव्वत भी
वह इसकी ठण्डी हवाएँ, वह इसकी बरसातें
वह दिन की गर्म तपिश और वह सर्द सी रातें
वह ठण्डी चाँदनी रातें वह गुलाबों की महक
गुलों के बोझ से झुकती वह डालियों की लचक
यही वह ख़ाक है जिससे उठा ख़मीर मेरा
यही वह ख़ाक है जिसने दिया ज़मीर मेरा
इसी की रेत में रुल कर खिला मेरा बचपन
बनाए रेत के घर में बरसा जब सावन
मेरे ख़्वाबों ने इसी घर में पलना सीखा

---

[1] जयपुर की भेंट
[2] निष्कपटता, निश्छलता
[3] जनता
[4] दूरदर्शीता

दिल के मौसम ने यहाँ रंग बदलना सीखा
चाँदनी रात में नग़्मों ने मचलना सीखा
मेरे जज़्बात ने अशआर में ढ़लना सीखा
कि मेरी फ़िक्र पे आया था यहीं पर जोबन
मेरे क़लम ने भी सीखा था ख़ुद-सरी[1] का चलन
मुझ से तू छूट गया अब नहीं आना-जाना
हाँ मगर दिल ने मेरे तुझको ही अपना माना
तुझे सलाम मेरा ऐ मेरे गुलाबी शहर
वो तेरे बाग़, तेरे महल और तेरा अंबर
बू-ए-ख़ुलूस से महका रहे तेरा गुलशन
बहार से कभी ख़ली न हो तेरा आँगन

[1] विद्रोह, बग़ावत

मारहरा[1]

असना बद्र

1971-

बान के पलंगों पर जब फुवार पड़ती है
चारपाई सीधी सी किस क़दर अकड़ती है

हाथ से बने तकिए कसमसाने[2] लगते हैं
पाम के बड़े पत्ते सरसराने लगते हैं

बारिश अपनी बेबाकी पाँव को दिखाती है
धूप सबके चेहरे को शाल से बचाती है

कैसी दिलकुशा ख़ुशबू क्यारियों से आती है
फ़ाख़्ता कहीं बैठी दूर से बुलाती है

मलगिजी[3] मुँडेरों पर बेल चढ़ने लगती है
मालती की टहनी से शाम झड़ने लगती है

साथ वाली चच्ची के घर से ज़र्दा आता है
कान में पहनने को ताज़ा बेला आता है

---

[1] उत्तर प्रदेश राज्य के एटा ज़िले में स्थित एक नगर है.

[2] अंगड़ाई लेना, बल खाना

[3] गन्दा, मिट्टी लगा हुआ

ख़ाला-बी ग़रारे को थाम कर निकलती हैं
बाजियाँ सहेली से छत पे जा के मिलती हैं

शन्नो अपनी गुड़िया का ब्याह जब रचाती है
एक भाई क़ाज़ी है दूसरा बराती है

पाएँती [1] दरी चादर बारहा बिगड़ती है
नन्ही-मुन्नी फ़रहाना जब सी-पारा[2] पढ़ती है

नैयरा की हंडकलिया भैया ने उड़ा ली है
पहर भर पकी खिचड़ी लम्हा भर में खाली है

शौकत अपने तकिये पर रेडियो बजाता है
आए दिन सुबह उठ कर सबसे डाँट खाता है

भाईजान कोठे पर रंग बरश छुपाते हैं
ख़ालाज़ाद बजिया[3] को जाने क्यूँ दिखाते हैं

लड़कियों ने खड़िया से नक़्श जो बनाए हैं
उनसे खेलने वाले हर तरफ़ से आए हैं

अम्माँ जी सरौते से छालिया[4] कतरती हैं
रिश्तों के मसाइल पर रोज़ बात करती हैं

---

[1] पैरों की तरफ़

[2] पवित्र क़ुरआन का एक खंड

[3] बड़ी बहन, बाजी

[4] सुपारी

तख़्त पर बिछी चादर आयशा ने काढ़ी है
फूल हैं शगूफ़े हैं पत्तियाँ हैं झाड़ी है

लकड़ियों के चूल्हे से इक धुआँ से उठता है
फ़ुँकनी कौन छूता है और कहाँ पे रखता है

सारा सेहन बस्ता है रोटियों की ख़ुशबू से
और बघार लगता है जैसे मुश्क-ए-आहू[1] से

कुण्डी खोल कर देखो क्या गली में साइल[2] है
फ़ातिहा के हल्वे पर बिल्ली कब से माइल है

चाय केतली में है तश्तरी है प्याली है
नाना के सिरहाने की फिर सुराही ख़ाली है

अब्बा जी के आने का वक़्त होने लगता है
पानदान की कुल्लिया शेफ़ू धोने लगता है

झूला जैसी कुर्सी में बानो खो चुका कब का
लालटेन का शीशा साफ़ हो चुका कब का

बच्चियाँ वज़ू करके नल से पानी भरती हैं
जा-नमाज़[3] का कोना नानी ठीक करती हैं

और अज़ान होती है

---

[1] कस्तूरी मृग
[2] भिखारी
[3] नमाज़ पढ़ने की दरी या चटाई आदि

ऐसा हिंदुस्तान

क़मर सुरूर

1975-

आओ हिंदुस्तान बनाएँ ऐसा हिंदुस्तान
प्यार का हो क़ानून जहाँ और सबका हो सम्मान

इंसानों में फैल रहा है नफ़रत का आज़ार[1]
दीन धरम में बाँट रहे हो उल्फ़त[2] का संसार
दिल का शीशा टूट गया तो रोएगा भगवान
आओ हिंदुस्तान बनाएँ ऐसा हिंदुस्तान

आज़ादी के जश्न में हम सब मिलकर क़स्में खाएँ,
ज़ात धरम सब पीछे छोड़ें हम आगे हो जाएँ
प्यार मोहब्बत देख के दुनिया हो जाए हैरान
आओ हिंदुस्तान बनाएँ ऐसा हिंदुस्तान

---

[1] रोग, पीड़ा
[2] प्रेम, स्नेह

इस धरती में हिंदी उर्दू जैसे मीठे बोल
इस धरती में क्यूँ नहीं गूँजे गीत ग़ज़ल अनमोल
इस धरती में मीर-ओ-ग़ालिब, तुलसी और रसखान
आओ हिंदुस्तान बनाएँ ऐसा हिंदुस्तान

नफ़रत तेरी साँसों की सब, कट जाएगी डोर
प्यार मोहब्बत का ही मंज़र होगा चारों ओर
बस दिल की आँखों से पढ़ लो गीता और क़ुरान
आओ हिंदुस्तान बनाएँ ऐसा हिंदुस्तान

गौतम का ज्ञान यही है और चिश्ती का है मान
मरियम[1] की लाज यही है और मीरा की है शान
इसकी मिट्टी में बस्ती है ऋषी मुनी की जान
आओ हिंदुस्तान बनाएँ ऐसा हिंदुस्तान

आज़ादी का रंग लिए है सखियों की टोली
आओ मिलजुल कर खेलें हम ख़ुशियों की होली
रंग बिरंगे फूल क़मर हैं भारत की पहचान
आओ हिंदुस्तान बनाएँ ऐसा हिंदुस्तान

---

[1] ईसा मसीह की माता का नाम

नग़मा-ए-इत्तिहाद[1]

शबाना नज़ीर

1954-

आज है साक़ी यह मयख़ाने में कैसा इंतिशार
तिश्ना-दिल[2] हैं तिश्ना लब है आज तेरे मयगुसार

मयकदे में और तफ़रीक़े-मज़ाहिब का ख़्याल
चिश्ती-ओ-नानक की रूहें कर रही हैं ये सवाल

नूर से रूहानियत[3] के थे सदा लबरेज़ जाम
कैसे बदला ये चलन? किसने बिगाड़ा ये निज़ाम?

जश्न-ए-आज़ादी मनाया था ये कल की बात है
ये शहीदाने वतन के ख़ून की सौग़ात है

बिस्मिल-ओ-अश्फ़ाक़ के नग़्मों की ये तफ़सीर[4] है
नेहरू व आज़ाद के ख़्वाबों की ये ताबीर[5] है

---

[1] एकता का गीत
[2] ख़्वाहिशमंद
[3] आध्यात्मवाद
[4] व्याख्या
[5] अर्थ, मतलब

लड़के आपस में नशेमन[1] को जलाना है हराम
अपने हाथों अपनी हस्ती को मिटाना है हराम

बादा-ए-हुब्बे-वतन की बज़्म में छलकाएँ जाम
मंदिर-ओ-मस्जिद का हो सबके दिलों में एहतराम[2]

---

[1] निवास स्थान

[2] आदर

वादी-ए-गुल[1]

शबाना नज़ीर

ये सरज़मीं जिसको दस्ते-क़ुदरत[2] ने मिस्ले-बाग़े-जिनाँ[3] बनाया
पहाड़ के क़ल्ब[4] को सजाकर बहार का आशियाँ बनाया

वो जिसकी झीलों में तैरते हैं मोहब्बत और प्यार के शिकारे
सुकूने दिल हैं, क़रार-ए-जाँ हैं वो जिसके दिलकश हसीं नज़ारे

ऋषी-मुनी, सूफ़ी-संत, दामन में जिसके फ़ितरत से लौ लगाएँ
सुकूँ का मसकन[5] जहाँ गुफाएँ, जहाँ मुक़द्दस हैं ख़ानक़ाहें

वो सब्ज़-ओ-शादाब[6] वादी-ए-गुल, कि जिसके बाग़ात रश्के[7]-जन्नत
वह जिसके फूलों में बूए-उल्फ़त[8], हवाएँ जिसकी ग़ुबारे-निकहत

---

[1] फूल की घाटी
[2] क़ुदरत का गाथ
[3] जन्नत के बाग़ के समान
[4] दिल
[5] रहने का स्थान
[6] हरी-भरी,
[7] ईर्ष्या
[8] प्यार की ख़ुशबू

ग़ज़ब है! दहशत-परस्त[1] आकर सुकून इसका मिटा रहे हैं
ख़ुदा ने जिसको बनाया जन्नत ये उसको दोज़ख़[2] बना रहे हैं

अब इसकी पुर-नूर[3] चोटियों से टपक रही हैं लहू की बूँदें
अब इसके फ़रज़ंद[4] नूहा-गर[5] हैं कि ज़ख़्म दिल के किसे दिखाएँ

यह अम्न की सरज़मीं है इस पर कभी न हम आँच आने देंगे
नई सदी है, नए क़लम से बहार की दास्ताँ लिखेंगे

---

[1] आतंकवादी

[2] जहन्नुम

[3] रौशन, प्रकाशमान

[4] बेटा

[5] विलाप करने वाला

गीत

फ़ौज़िया रुबाब

1988-

हमारा हिंदुस्तान
प्यार मोहब्बत अमन तरक़्क़ी ये है ख़्वाब हमारा
अल्लाह सोहने प्यारी धरती है एहसान तुम्हारा
अपनी इस धरती पर अपनी जाँ भी है क़ुर्बान
न तेरा न मेरा, देख हमारा हिंदुस्तान

इक दूजे का दुख-सुख बाँटें, बाँटें हर सू प्यार
नफ़रत दिल से दूर करें हम बन जाएँ दिलदार
ख़त्म करें दिल की दूरी को मुश्किल हो आसान
न तेरा न मेरा, देख हमारा हिंदुस्तान

जीवन जीवन आस में बीता कब सब एक हो जाएँ
मज़हब फ़िर्क़ों[1] से निकलें और सब इंसाँ कहलाएँ
फिर देखें दुनिया में अपनी धरती की इक शान
न तेरा न मेरा, देख हमारा हिंदुस्तान

बाग़ों में इक कोयल बोले, प्यार के गीत सुनाए
हर बासी इस देस का जग में इसका नाम बनाए
अपना प्यार देस हमारा है अपनी पहचान
न तेरा न मेरा, देख हमारा हिंदुस्तान

---

[1] गिरोहों

अब तो 'रुबाब' ने आँखों में भी सपना एक सजाया
देस की ख़ातिर मर मिटने का दिल में अज़्म[1] जगाया
एक नहीं ये लाखों जानें हों इस पर क़ुर्बान
न तेरा न मेरा, देख हमारा हिंदुस्तान

[1] संकल्प, ख़्वाहिश

क़ितआत[1]

मीनू बख़्शी

1955-

न तख़्त-ओ-ताज मुल्क-ओ-माल देना
न सीम-ओ-ज़र [2] न दुर्रो-लाल [3] देना
वतन के इश्क़ में मर जाऊँ जो मैं
मेरे तन पर तिरंगा डाल देना

हमें नफ़रत नहीं हरगिज़ गवारा
मिसाली है हमारा भाईचारा
नहीं कसरत में जो वहदत[4] के क़ायल
वो आ के देख ले भारत हमारा

---

[1] उर्दू अथवा फ़ारसी कविता की एक क़िस्म जिसमें ग़ज़ल की तरह क़ाफ़िए की पाबंदी होती है, और जिसमें कोई एक बात कही जाती है.

[2] सोना और चाँदी अर्थात धन-दौलत

[3] अनमोल क़ीमती पत्थर (रूबी)

[4] कसरत में वहदत=अनेकता में एकता

भड़का रहे हैं आग जो मज़हब के नाम पर
ऐसों की बात में न कभी आईएगा आप
अल्लाह क़ातिलों से तो होता नहीं है ख़ुश
हर सम्त इस प्याम को पहुँचाईएगा आप

ज़रा सुन लो हमारे नौजवानो!
जो तुम से कह रही हूँ है हक़ीक़त
ग़ुलामी झेलनी पड़ती जो तुमको
समझते तुम भी आज़ादी की क़ीमत

कारगिल के शहीदों के नाम

परवीन कैफ़

1956-

किया शहीद जवानों को दिल ने झुक के सलाम
ज़बाँ पे आया है जब जब भी कारगिल का नाम

वतन को अपना लहू देके रौशनी दी है
इन्हीं जवानों ने हम सबको बेख़ुदी दी है
मिली जो फ़तह[1] तो हमको बहुत ख़ुशी दी है
किया शहीद जवानों को दिल ने झुक के सलाम
ज़बाँ पे आया है जब जब कारगिल का नाम

बहादुरी से जवाँ अपने कामयाब हुए
सिपाही सारे ज़माने में इंतिख़ाब[2] हुए
हमारे मुल्क के दुश्मन शिकस्तयाब[3] हुए
किया शहीद जवानों को दिल ने झुक के सलाम
ज़बाँ पे आया है जब जब कारगिल का नाम

तुम्हारा नाम सभी लोग लेंगे इज़्ज़त से
हमेशा याद करेंगे तुम्हें मोहब्बत से

---

[1] जीत

[2] श्रेष्ठ

[3] पराजित

डरेंगे दुश्मन तुम्हारी हिम्मत से
किया शहीद जवानों को दिल ने झुक के सलाम
ज़बाँ पे आया है जब जब कारगिल का नाम

जो छुप के वार करेगा वह मारा जाएगा
वह बुज़दिलों के लक़ब[1] से पुकारा जाएगा
बुलंदियों पे तो परचम हमारा जाएगा
किया शहीद जवानों को दिल ने झुक के सलाम
ज़बाँ पे आया है जब जब कारगिल का नाम

ये मानती हूँ कि दुनिया की ज़िंदगी है हसीं
हमें है अपने जवानों पे फ़ख़्र ऐ 'परवीं'
बहादुरी पे हमेशा किया है इनकी यक़ीं
किया शहीद जवानों को दिल ने झुक के सलाम
ज़बाँ पे आया है जब जब कारगिल का नाम

[1] उपनाम, उपाधि

वो सितारे

शाइस्ता यूसुफ़

1952-

सदियों की ग़ुलामी बाग़ी हुई
साहिल पर नमक की पहाड़ी से
आफ़ताब[1] कि किरणों ने
सत्याग्रह को नमस्कार किया
चरख़ों पर उम्मीद के जोशीले
सफ़ेद धागे खद्दर की पोशाक में दमके
हिंद के सतरंगी मतवाले निकले
यकजहती[2] की तलवारों ने
नफ़रत की ज़ंजीरें काट दीं
फ़लक[3] पर गूँजती सदाओं ने गहरी रात
का सीना चीरा
सितारों की कहकशाँ ज़मीं के चमन में उतरी
फूलों ने सितारों को रंगों से भर दिया
सुब्ह की पहली किरण के साथ
मोहब्बत भरी अम्नो-अमान[4] की सदाएँ गूँजीं

---

[1] सूरज
[2] एकता
[3] आसमान
[4] शांति और सुरक्षा

इंसानियत के सितारों ने फूलों के रंग से परचम रंगा
और भारत का झण्डा लहराया
आज ढूँढ़ती हैं हमारी आँखें
यकजहती के उन सितारों को
जो तिरंगे के रंगों में चमकते रहे
काश कोई दिलों की तारीकी दूर करे
उल्फ़त की किरण से हमारे दिलों को रोशन कर दे

माहिये

उल्फ़त शाकिर

ऋषियों की यह धरती है
भारत की फ़ज़ाओं [1] में
कस्तूरी महकती है

ख़्वाजा [2] का ख़िताब आया
देवओं की भुजाओं में
पुष्कर से गुलाब आया

ऊँचा यह हिमाला है
दुश्मन से लड़ें क्यूँ हम
रक्षक ये हमारा है

पनघट की बहारें हैं
कुछ छाँव में पीपल की
झूलों की क़तारें हैं

भारत है महान अपना
करती हैं हवाएँ भी
सुनिये तो बखान अपना

---

[1] वातावरण

[2] ख़्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन : एक नई पहल

भारत अपनी समृद्ध परंपरा को आत्मसात करते हुए धार्मिक, भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद 'अनेकता में एकता' के मूलमंत्र का अनुगामी रहा है। इस महान देश का इतिहास मानव-प्रेम के दृष्टान्तों से भरा पड़ा है। यह शक्ति, शांति और भक्ति के गीतों का ही प्रतिफल है कि 'धरती के बासियों की मुक्ती प्रीत में है'। लेकिन यह भी एक दुखद सत्य है कि वर्तमान में भारत कठिन समय से गुज़र रहा है। ऐसे समय में शक्ति के साथ शान्ति और सद्भाव की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे देश को किसी की बुरी नज़र लग गई। सामाजिक निकटता दूरियों में परिवर्तित हो रही है और देशवासियों में एक दूसरे के प्रति अंजाना और अदृश्य खिंचाव का बोध हो रहा है। वास्तविकता यह भी है कि देश की अधिकांश जनसंख्या अभी भी इस अलगाव तथा विभाजन का हिस्सा बनने के लिए तत्पर नहीं है, परन्तु बहुसंख्यक जनता यदि मौन रहती है तो उसका अस्तित्व गहन अन्धकार के गर्त में समा जाता है। वर्तमान में अधिकांश लोग समाज एवं मानवता के दुखों के निवारण के बजाय केवल और केवल 'स्व' की परिक्रमा में व्यस्त हैं। वे स्वयं की पीड़ा से ग्रस्त हैं। वह मनुष्य जो कभी जनसाधारण की आकांक्षा का स्वर हुआ करता था आज अपने आप तक सीमित होकर रह गया है। घृणा, शत्रुता, आघात-प्रतिघात एवं आतंकवाद के व्यापार भारतीय समाज को पूर्णतः छिन्न-भिन्न करने में लगे हुए हैं। इन परिस्थितियों में असहाय एवं निष्क्रिय होकर बैठे रहना संभव नहीं है बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि उन सभी प्रतीकों को पुनर्जीवित किया जाए जिन्होंने ''प्रेम गाथाओं'' और ''प्रेम के ढाई अक्षर'' द्वारा मानव समाज को एक-दूसरे से जोड़ रखा था। जिनका मानना था कि देशवासियों, यहाँ पर जन्म लेने वालों, यहाँ पर निवास करने वालों, यहाँ की नदियों का पानी पीने वालों, यहाँ की मिट्टी में उपजे अन्न से अपना पेट भरने वालों को इस

बात का आभास कराया जाए कि उनका धर्म, उनकी भाषा और क्षेत्र भिन्न हो सकते हैं परन्तु माता और मातृभूमि से उनका संबंध इस संसार के सृजनहार और पालनहार की इच्छा का परिणाम है। इसी क्रम में यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि जिस बात से ईश्वर प्रसन्न हो, उसे स्वीकार कर लेने और अपना लेने में ही मानव हित है।

भारत में एक दूसरे को जोड़ने वालों का यदि उल्लेख किया जाए तो उनके नाम एवं कार्यों को संग्रहित करने में देर नहीं लगेगी, परन्तु यदि किसी व्यक्ति से मानव समाज को विभाजित करने वालों के नाम पूछे जाएँ तो उसे उनके नाम स्मरण करने में और बताने में बड़ी कठिनाई होगी।

इन सबके बावजूद आज मनुष्यों के बीच दूरी, टकराव, हिंसा तथा उपद्रव बार-बार दृष्टिगोचर को क्यों हो रहा है? इसका साधारण सा उत्तर यही है कि हम भूल गए हैं कि हमें क्या याद रखना चाहिए। इस समय हमें ईशदूतों, सूफ़ी-संतों और ऋषि-मुनियों के त्याग, तपस्या, समर्पण और सेवाभाव को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। उनकी शिक्षाओं तथा उनके उपदेशों को एक बार फिर लोगों तक पहुँचाया जाना चाहिए।

इसी चिंतन और विचारधारा के आलोक में **'ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन'** की स्थापना की गई है। हज़रत अमीर ख़ुसरो मध्यकालीन भारत के एक ऐसे लोकप्रिय, मनमोहक एवं सार्वलौकिक व्यक्तित्व हैं, जिन्हें शताब्दियों के पश्चात भी याद रखा गया है और सदैव याद रखा जाएगा। वह सूफ़ी भी थे और सिपाही भी, कवि भी थे और संगीतकार भी, इतिहासकार भी थे और इतिहास बनाने वाले भी। उनके व्यक्तित्व की सार्वभौमिकता और विशिष्टता ने उन्हें न केवल विभिन्न गुणों का वाहक बनाया था अपितु बहुआयामी विशेषताओं से परिपूर्ण किया था। मध्यकालीन भारतीय इतिहास के बड़े बड़े नामियों के निशान मिट गए परन्तु हज़रत अमीर ख़ुसरो आज भी न केवल हमारे इतिहास का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत के ध्वजवाहक भी हैं। वे लोगों के हृदय में इस प्रकार रचे-बसे हैं कि हर्षोल्लास हो अथवा दुःख एवं पीड़ा के क्षण, हज़रत अमीर

ख़ुसरो का नाम तथा उनकी रचनाएँ सदैव अपनी प्रासंगिकता के साथ उपस्थित रहती हैं।

इस गुत्थी को तो मनोवैज्ञानिक ही सुलझा सकते हैं कि हज़रत अमीर ख़ुसरो ने अपनी विभिन्न दरबारी एवं ख़ानक़ाही गतिविधियों के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित किया। यह प्रश्न इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि ख़ुसरो ने यह संतुलन अपने व्यक्तित्व के खरेपन के साथ स्थापित किया था। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी सहभागिता और भूमिका खुली पुस्तक की भांति सब पर स्पष्ट थी। सत्यवादिता से परिपूर्ण चिंतन हज़रत अमीर ख़ुसरो के व्यक्तित्व को हमारे समक्ष आदर्श के रूप में उपस्थित करता है।

इस भारतीय तुर्क का देश-प्रेम न केवल आदर्श है, बल्कि स्पृहणीय भी है। ख़ुसरो की दृष्टि में भारत की धरती अदन का स्वर्ग है। यहाँ के लोग प्रत्येक रंग व रूप में उन्हें प्रिय हैं। यहाँ के दरबारों के समक्ष ईरान, तूरान और ख़ुरासान के दरबार फीके दिखाई देते हैं। यहाँ के लोग कृषि, उद्योग, व्यापार के साथ साथ विज्ञान एवं साहित्य की प्रत्येक शाखा, कला के प्रत्येक क्षेत्र और सैन्य प्रशिक्षण के प्रत्येक रूप में अद्भुत एवं अनूठे हैं। एक कट्टर एवं परम्परावादी मुसलमान होने के बावजूद भी उन्हें भारतवासियों का एकेश्वरवादी संप्रदाय एवं विचारधारा प्रिय है। वे कहते हैं कि ''यद्यपि भारतवासी हमारे जैसा धर्म नहीं रखते, परन्तु उनकी अधिकतर मान्यताएं हमारे जैसी हैं।''

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम भारतवासी, भारत की प्रत्येक परंपरा को, चाहे वह धार्मिक हो अथवा सांस्कृतिक, सभ्यतागत हो अथवा भाषायी, अकादमिक एवं शास्त्रीय हो अथवा साहित्यिक, उसे हज़रत अमीर ख़ुसरो की तरह देखें, अपनाएं और उसके लिए अपने आप को समर्पित कर दें। हज़रत अमीर ख़ुसरो, जिनकी माता भारतीय थीं और पिता तुर्क, एक ऐसे भारतीय हैं जो न केवल भारत की महानता के तराने गाते हैं बल्कि अपने आप को इस मिट्टी का इस प्रकार अभिन्न अंग बनाना चाहते हैं जैसे यह मिट्टी ही सब कुछ हो। देश की मिट्टी से इस लगाव और प्रेम को अल्ताफ़ हुसैन हाली ने इस प्रकार वर्णित किया है:

तेरी इक मुश्त-ए-ख़ाक के बदले
लूँ न हर्गिज़ अगर बहिश्त मिले

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन सभी प्रकार के भेदभाव और वैमनस्य से ऊपर उठकर देशभक्ति, मानव प्रेम तथा प्रकृति से निकटता को अंगीकार करके सर्वधर्म सहिष्णु और प्रगति की ओर उन्मुख समाज के निर्माण के लिए प्रयासरत है। शैख़ इब्राहीम ज़ौक़ के अनुसार:

गुल्हाए-रंगा-रंग से है ज़ीनत-ए-चमन
ऐ 'ज़ौक़' इस जहाँ को है ज़ेब इख़्तेलाफ़ से

सदस्य, बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स

प्रो. अख़्तरुल वासे
सिराजुद्दीन क़ुरैशी
रोहित खेड़ा
रंजन मुखर्जी

.ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की प्रकाशित पुस्तकें: एक संक्षिप्त परिचय

हिंदुस्तान की शरई हैसियत

हिंदुस्तान और इस्लाम का रिश्ता उतना ही पुराना है जितना हज़रत आदम (अ.स.) का स्वर्ग से धरती पर आगमन। क्योंकि हज़रत आदम (अ.स.) पहले इंसान भी थे और पैग़म्बर भी। मुसलमानों की मान्यता के अनुसार वह हिंदुस्तान में ही उतारे गये थे, इसलिए हिंदुस्तान के मुसलमानों का यह मादर-ए-वतन (मातृभूमि) ही नहीं बल्कि पिदरी वतन (पैतृक भूमि) भी है। यही वह भूमि है जहाँ से पैगंबर मुहम्मद (सल्ल.) को ठंडी हवाएँ आती थीं। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की पहल पर लिखी गई पुस्तक "हिंदुस्तान की शरई हैसियत" में डॉ ज़फ़र दारिक क़ासमी ने जिन बहसों और मुद्दों पर चर्चा की है, वह निश्चित रूप से आज की ज़रूरत हैं।

उर्दू की तरवीज-ओ-इशाअत में ग़ैर-मुस्लिमों की ख़िद्मात

(उर्दू के प्रचार व प्रसार में गैर-मुस्लिमों की सेवाएं)

यह बात जग-ज़ाहिर है कि भाषाओं का कोई धर्म नहीं होता लेकिन हर धर्म को भाषाओं की ज़रूरत होती है। इस किताब की विशेषता यह है कि इसमें प्रारम्भ से लेकर वर्तमान काल तक के उर्दू के अधिकांश गैर-मुस्लिम लेखकों और कवियों का उल्लेख किया गया है। पुस्तक के लेखक तालीफ़ हैदर ने इस बात का पूरा प्रयास किया है कि उन लेखकों का उल्लेख भी कर लिया जाए जिन्हें इतिहास में या तो भुला दिया गया है या जिनकी विद्धतापूर्ण सेवाओं के बारे में हम बहुत कम जानते हैं।

आत्मवृत्तांत

यह पुस्तक शेखुल-इस्लाम हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी की प्रसिद्ध आत्मकथा "नक़्श-ए-हयात" का हिंदी अनुवाद है। यह सिर्फ़ एक किताब नहीं बल्कि हिंदुस्तान के स्वतंत्रता आंदोलन में दारुल उलूम देवबंद के विद्वानों के संघर्ष का एक प्रामाणिक और विश्वसनीय दस्तावेज़ है। हज़रत शेख़ुल-इस्लाम ने जमीयत उलेमा-ए-हिंद और स्वाधीनता संग्राम के राष्ट्रीय नेताओं

की स्थितियों और उपलब्धियों को अपनी क़लम से रोशन कर दिया है। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन के लिए इस बहुमूल्य पुस्तक का आसान एवं सरल हिंदी अनुवाद इंडो-अरब मल्टीलिंगुअल प्राइवेट लिमिटेड के जनाब अनवर क़ासमी द्वारा किया गया है।

हिंदी साहित्य में मुस्लिम साहित्यकारों का योगदान

हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में मुस्लिम लेखकों और कवियों का योगदान हिंदी साहित्य के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। यह पुस्तक जामिया मिल्लिया इस्लामिया के हिंदी विभाग में असिस्टैंट प्रोफ़ेसर डॉ आसिफ़ उमर द्वारा लिखी गई है। जिससे यह तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आता है कि हिन्दी और उर्दू हमारी साझी सभ्यता के प्रतीक हैं जिनमें धर्म और आस्था का कोई भेद नहीं है। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित उनकी हिंदी पुस्तक का उर्दू में अनुवाद प्रसिद्ध लेखक और अनुवादक जनाब फ़ारुक़ अर्गली साहब ने किया है।

मेरे वतन की ख़शबू

यह पुस्तक उर्दू शायरात (कवयित्रियों) के अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति है। अज़रा नक़वी की यह पुस्तक महिलाओं के संबंध में अपने विषय की विशिष्टता के मामले में एक नया आयाम है और ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की नई पहल भी है।

हिंदुस्तान उर्दू शायरी के हवाले से

भारतीय समाज भाईचारे और एकता और व्यापकता के उज्ज्वल इतिहास का एक चमकदार सूचकांक है। प्रेम और एकता की यह भावना जब उर्दू कविता में ढ़लती है तो देशभक्ति की व्यापक अवधारणा को आकार देती है। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की यह पुस्तक जिसे डा. उमैर मंज़र ने सम्पादित किया है, इस मायने में क़ाबिले-तारीफ़ है कि इसने उस भावना और दृष्टिकोण को इतिहास की गोद से निकालकर आज फिर से सामने ला दिया है, जिसकी आज अत्यंत आवश्यकता है।

मुहम्मद दाराशिकोह

दारा शिकोह मुग़लकाल के एक सदाबहार और बेमिसाल व्यक्तित्व का नाम है। वह एक महान विद्वान, विचारक और बुद्धिजीवी भी थे। उन्होंने सरकार और साम्राज्य के साथ एक विद्वान, एक सूफ़ी, एक लेखक और एक विचारक का जीवन व्यतीत किया। रवादारी की अपनी परंपरा में उन्होंने हिंदुस्तान के भीतर सामाजिक सद्भाव के लिए नई नींव तलाश कीं। दारा शिकोह के राजनीतिक और सामाजिक विचार अब सिर्फ़ इतिहास का हिस्सा मात्र रह गए हैं, लेकिन डॉ मुफ़्ती मुहम्मद मुश्ताक तिजारवी द्वारा लिखित यह पुस्तक देश के वर्तमान परिदृश्य में देश की अधिकांश सामाजिक समस्याओं को हल करने में मदद कर सकती है।

मुस्लिम उल्मा का मुताला-ए-हिंदू धर्म

(मुस्लिम उल्मा (विद्वानों) का हिंदू धर्म का अध्ययन)

मुस्लिम उल्मा का मुताला-ए-हिंदू धर्म नामी इस पुस्तक के लेखक डॉ ज़फ़र दारिक क़ासमी ने इस पुस्तक में जिन बातों को प्रस्तुत किया है वो निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह पुस्तक मौजूदा दौर में विभिन्न धर्मों के अध्ययन की आवश्यकता के फ़ायदों की व्याख्या करती है। पुस्तक इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि धर्मों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करना क्यों महत्वपूर्ण है। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में इस बात को उजागर करने का प्रयास किया गया है कि समाज में सद्भाव और भाईचारे का प्रचार व प्रसार तभी संभव है जब हम विभिन्न धर्मों के अध्ययन और समझ को पूरी तरह से आगे बढ़ाएंगे।